समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• अप्रैल २०१२ • वर्ष ६३ • अंक ४

मूल्य : ₹.१० प्रति, वार्षिक ₹.१००

अखिल भारतीय समिति की बैठक : ८ अप्रैल, हरिद्वार

समाज दिखावा एवं आडम्बर से बचे "सादगी-क्रांति" का आह्वान

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बद्रीप्रसाद भीमसरिया का देहावसान

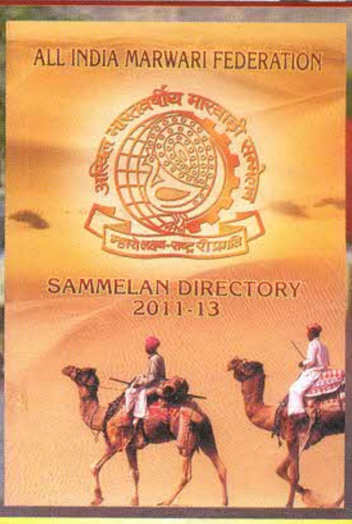

सम्मेलन डायरेक्टरी २०११-१३ का विमोचन

SR RUNGTA GROUP

Caring for Land and People...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Ferro Alloy Producer & Mineral Processors

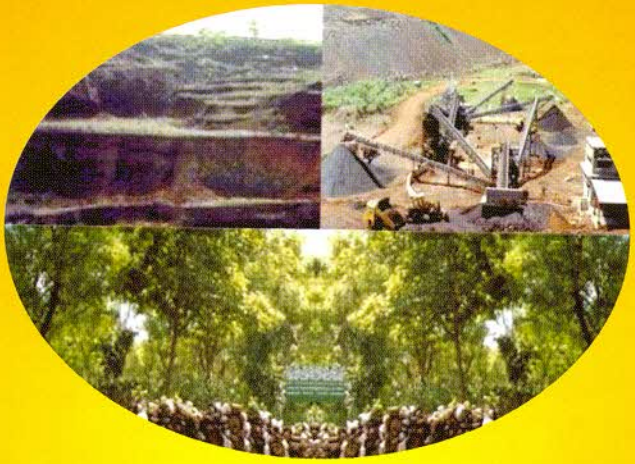

- ***IRON ORE*** *- BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *- BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON*** *LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com, GRAM: "RUNGTA"

REGISTERED OFFICE

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA 700017, INDIA
Phone: 033-2281 6580/3751; Fax: 91-33-2281 5380; Email: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION

RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL 758035, DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 275221/277481/ 441; Fax: 91-6767-276161
Email: rungta_bbl@yahoo.co.in, GRAM: "RUNGTA"

SPONGE IRON DIVISION

ORISSA
RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL 758035
DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 27689/277391/021
Fax: 91-6767-277011

JHARKHAND
RUNGTA OFFICE
SADAR BAZAR, CHAIBASA - 833201
DIST- SINGHBHUM(W), JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256621/256321
Fax: 91-6582-257521

समाज विकास

◆ अप्रैल २०१२ ◆ वर्ष ६३ ◆ अंक ४ ◆ एक प्रति - १० रु. ◆ वार्षिक-१०० रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	*पृष्ठ संख्या*
चिट्ठी आई है	४
सम्पादकीय : धन का बढ़ता महत्व : गिरते नैतिक मूल्य – ***सीताराम शर्मा***	५
अध्यक्षीय : तीर्थनगरी हरिद्वार : संस्कृति एवं संस्कारों की संवाहक – ***हरि प्रसाद कानोड़िया***	७
तीर्थनगरी में बैठक होने से कार्य की लालसा तीव्र होती है – ***संतोष सराफ***	९
धार्मिक बनें, धर्मभीरु नहीं – ***संजय हरलालका***	११
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बद्रीप्रसाद भीमसरिया को श्रद्धांजलि	१२
सामाजिक कार्यकर्ता गोविन्द शर्मा का देहावसान	१२
अखिल भारतीय समिति की बैठक : हरिद्वार में	१३-१८
प्रान्तीय समाचार – पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन की नवगठित कार्यकारिणी की पहली बैठक.....	१९-२०
उच्च शिक्षा कोष : आवेदन पत्र आमंत्रित	२०
प्रान्तीय समाचार – झारखण्ड : राजस्थान दिवस पर कवि सम्मेलन	२१
प्रान्तीय समाचार – बिहार : डॉ. राममनोहर लोहिया व्याख्यानमाला	२३
प्रान्तीय समाचार – कानपुर शाखा : होली मिलन एवं मारवाड़ी पंचांग का विमोचन	२४
प्रान्तीय समाचार – जोरहाट शाखा : सामूहिक फाग उत्सव एवं हास्य कवि सम्मेलन	२५
प्रान्तीय समाचार – छत्तीसगढ़ : प्याऊ का उद्घाटन	२६
याद किये गए कवि दम्माणी 'मस्त'	२६
नाटक : संस्कार – ***हरिप्रसाद कानोड़िया***	२७-२८
राजस्थानी कहानी : सुख आपणै आसपास – ***नथमल केडिया***	२९
कविता / राजस्थानी कविता – ***नथमल केडिया/प० रमेश मोरोलिया***	३०
पुस्तक समीक्षा – आत्म मंथन	३१
SMS की दुनिया	३१
सम्मेलन द्वारा विवाह समारोहों में सादगी बरतने की अपील	३२
सम्मेलन के नए आजीवन सदस्यों का स्वागत	३३
सम्मेलन के नए विशिष्ट सदस्यों का स्वागत	३४

स्वत्वावधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७

फोन : ०३३-२२६८ ०३१९ ◆ email: aimf1935@gmail.com

के लिये श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा

सीडीसी प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित

प्रधान संपादक : सीताराम शर्मा

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

पत्रिका के कलेवर में निखार

'समाज विकास' का फरवरी २०१२ का अंक मिला। आप द्वारा लिखा संपादकीय "हम हिंदी भाषा भूल रहे हैं" पढ़ा। बहुत अच्छा लगा। लेख के अंतिम वाक्य का छोर 'विश्व हिंदी को अपना रहा है', आपका यह आकलन आशाजनक तथा विश्वसनीय लगता है। निश्चय ही विश्व पटल पर हिंदी का भविष्य सुनहरा होने के साथ साथ वैश्विक भाषाओं पर अपने वर्चस्व का विस्तार करने में सक्षम है। इस विचार हेतु साधुवाद।

समाज विकास पत्रिका दिनों दिन हर दृष्टि से आगे बढ़ रही है। समाज सुधार एवं विकास संबंधी सामग्री के साथ साथ पत्रिका का कलेवर भी निखर रहा है।

– **डॉ. शंकर लाल स्वामी**
नत्थूसर गेट के बाहर
बीकानेर, राजस्थान

एकजूट कार्य करें

'समाज विकास' का होली विशेषांक मिला। अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री कानोड़िया जी द्वारा लिखित 'महिलाओं के बढ़ते कदम' पढ़कर बहुत खुशी हुई। जालना के सम्मेलन में उनसे मुलाकात हुई थी। १४ वर्ष से सभी युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्षों से मेरा निवेदन रहा है कि महिला सम्मेलन, युवा मंच एवं मारवाड़ी सम्मेलन तीनों विरोधियों की तरह नहीं बल्कि एकजूट होकर कार्य करें, ताकि हम मारवाड़ी समाज की छवि पूरे भारतवर्ष में सर्वोपरि ला सकें। इस मुहिम में हम सब उनके साथ हैं।

– **प्रेमा पंसारी**, सम्बलपुर
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा
अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

नोट – अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन सदैव तीनो संस्थाओं सम्मेलन, युवा मंच एवं महिला सम्मेलन के एकजूट होकर कार्य करने का हामी रहा है एवं इसके लिये हर सम्भव प्रयास करता रहा है। २००६ में भुवनेश्वर में आयोजित सम्मेलन के राष्ट्रीय अधिवेशन में तत्कालीन अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया की युवा मंच एवं महिला सम्मेलन के अध्यक्ष एवं मंत्री सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के पदेन सदस्य रहेंगे। सम्मेलन के कई राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारी युवा मंच से उभरे है। आपकी भावना का हम स्वागत करते है। इस दिशा में तीनों संस्थाओं के पदाधिकारियो की संयुक्त बैठक की योजना है।

विकास की सीढ़ियाँ चढ़ता समाज विकास

'समाज विकास' का ताजा अंक प्राप्त कर अति हर्ष हुआ। संकलित रचनाएँ आश्वस्त करती हैं। विकास की सीढ़ियाँ चड़ता 'समाज विकास' दिन प्रति दिन लोकप्रितया के शिखर छू सकेगा।

– **केसरीकांत शर्मा, 'केसरी'**
आनंदपुरा वार्ड - १
मण्डावा (राजस्थान)

जन जागृति की मशाल जलाए रखें

समाज विकास का फरवरी २०१२ अंक मिला। धन्यवाद। सामाजिक चेतना और जीवंत संवाद का मंच है यह पत्र। सम्पादकीय में आपने समसामयिक अहम् मुद्दे को उठाया है कि "हम हिन्दी भाषा भूल रहे हैं"। आज हिन्दी कम और हिंगलिस का प्रयोग ज्यादा हो रहा है और हम इसे सहज ले रहे हैं। यह हिन्दी के मूल स्वरूप के साथ तो छेड़-छाड़ है ही, इसके अस्तित्व को भी खतरा है। आज बोलियां लुप्त होती जा रही हैं। बोली बचेंगी तो ही भाषा बचेंगी। वैश्विकरण के नाम पर अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है और हम नवांकुरों को इंगलिश मीडियम स्कूलों में प्रवेश दिलाकर गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं और स्वयं की भाषा, और संस्कृति से विमुख होते जा रहे हैं। आपकी चिंता से सहमत होते हुए कहना चाहूँगा (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के शब्दों में) निज भाषा ही उन्नति का मूल है।

ताऊ शेखावाटी का होली गीत एवं शंकर झकनाड़िया की कविता अच्छी लगी। राष्ट्रीय अध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया की महिलाओं के प्रति दृष्टि एवं संतोष सराफ का 'प्रगति का पैमाना परिवर्तन' चिंतनपरक आलेख हैं। सुप्रिया की शाकाहार चेतना जीवन शैली एवं नजरिय को बदलने वाली है। विभिन्न सामाजिक गतिविधियों को समेटे पत्रिका मारवाड़ी समाज को जोड़ने का काम करती है। सभा, सम्मेलनों के माध्यम से एक संदेश जाता है समाज में। आप जन-जागृति की यह मशाल जलाए रखें।

– **शिशुपाल सिंह 'नारसरा'** फतेहपुर, सीकर

मुझे विश्वास है कि आपके संपादकत्व में इस सामाजिक मुख पत्र की विशेष उन्नति होगी।

– **राधेश्याम पोद्दार**
कांकुड़गाछी, कलकाता

सम्पादकीय

धन का बढ़ता महत्व : गिरते नैतिक मूल्य

– सीताराम शर्मा

निःसन्देह गत कई दशकों से समाज एवं देश में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों में एक लगातार गिरावट आ रही है। सामाजिक स्तर पर टूटते परिवार, बढ़ते तलाक, अभूतपूर्व आडम्बर एवं दिखावा, बजुर्गों के प्रति सम्मान में कमी तथा राष्ट्रीय स्तर पर सर्वव्यापी भ्रष्टाचार, आर्थिक घोटाले इन मूल्यों की गिरावट की कहानी ही कहते हैं। अब तो कोई क्षेत्र न्यायपालिका, पत्रकारिता, यहां तक की सुरक्षा भी इससे अछूता नहीं बचा है।

धन की महत्ता एवं बढ़ते प्रभाव ने सभी नीतियों, सिद्धान्तों, एवं मूल्यों को बौना कर दिया है। भौतिकवादी एवं भोगवादी युग में पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में एक अप-संस्कृति का जन्म हो रहा है। विवाह जैसी पवित्र, शाश्वत एवं वैदिक परम्परा की महत्ता पर प्रश्न चिन्ह लगाना इसी अप-संस्कृति का परिचायक है।

जीवन एवं मृत्यु के बीच विवाह सबसे बड़ा एवं महत्वपूर्ण संस्कार हैं। प्रायः सभी धर्मों में विवाह को ईश्वर का वरदान माना गया है। सम्भवतः यही वजह है कि प्रत्येक विवाह में धार्मिक पुजारी की उपस्थिति आवश्यक है। चाहे वह पुजारी या ग्रन्थी हो, इमाम या काजी हो, या भले ही पादरी हो। सभी धर्मों में वैवाहिक संस्था की पवित्रता एवं शाश्वतता का सम्मान किया गया है तथा तलाक को अवांछित एवं दुःखद बताया गया है।

निःसन्देह विवाह के रूप एवं स्वरूप में कतिपय परिवर्तन हो रहे हैं। कुछ शुभ, कुछ अशुभ। समाज को इन प्रश्नों पर विचार करना होगा एवं समयानुसार अपने आपको ढालना होगा। प्रेम-विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, दहेज, दिखावा, आडम्बर, तलाक सामाजिक प्रश्न हैं जिन पर बातचीत आवश्यक है। धन एवं सम्पन्नता के अहंकार में मनुष्य को स्व.केन्द्रीय बना दिया है। वह व्यक्तिवादी बनता जा रहा है। अपने अतिरिक्त किसी अन्य के विषय में सोचना नहीं चाहता। अपने व्यक्तिगत सुख एवं आनन्द में किसी भी तरह की कमी या दखलअन्दाजी को वह बर्दाश्त करने के लिये तैयार नहीं है। उसके लिये अपना सुख एवं अपना जीवन ही सर्वोपरि है। उसे अपने सामाजिक दायित्व से कोई सरोकार नहीं। सामाजिक जिम्मेवारी के बन्धन से मुक्त यह व्यक्ति सामाजिक नैतिक मूल्यों को स्वीकार नहीं करता, वह एक ऐसे माहौल में जीना चाहता है जहां वह स्वतंत्र, स्वच्छंद एवं मनमर्जी का जीवन केवल अपने सुखों के लिये जी सके। उसे पारिवारिक बंधनों रिश्तों की परवाह नहीं है, ये रिश्ते उसकी मनमानी जीवनशैली में रोड़ा अटकाते हैं। सफलता एवं सम्पन्नता के खुमार में उसे न संयुक्त परिवार की पर्वाह है और न ही समाज की। समाज की मर्यादाओं को अपनी खुशी में कांटा समझता है। जीवन के तराजू पर तौलता आज का समाज केवल 'टका धर्म' में विश्वास करता है। धन बोलता है, धन चलता है। हमें इस टका धर्म को अलविदा करना होगा। अन्यथा सामाजिक - नैतिक मूल्यों की गिरावट को रोकना सम्भव नहीं होगा। विवाह जैसी पवित्र संस्था को खतरा बना रहेगा। एक वर्ग है जिसे समाज की परवाह नहीं है। क्योंकि ये समाज को धत्ता बताने की ताकत का गुमान रखते हैं। तभी तो हाल ही में आयोजित एक परिचर्चा में कुछ एक वक्ता वैवाहिक संस्थान की महत्ता खोने की बात करते-करते दूसरी प्रासंगिता पर भी सवाल उठा गये, यहां तक कि समलैंगिक विवाह की चर्चा तक कर डाली।

यह दुर्भाग्य है कि समाज ने 'धन' के समक्ष आत्म समर्थन कर दिया है। आज समर्थ कुछ भी कर सकता है। वह समाज को अंगुली पर नचाता है। समाज उस पर अंगुली उठाने की क्षमता को खो रहा है।

यह दुर्भाग्य है कि समाज में 'सही' को 'सही' बोलने वाले प्रायः लुप्त हो गये हैं। धन के पहिये के रथ पर समाज चल रहा है। जो समर्थ है, जो धनी है वही सही है। इसीलिये तो जब बेटा बाप से अधिक धनी हो जाता है तो परिवार एवं समाज के कानून के साथ-साथ बाप-बेटे के रिश्ते भी वही तय करता है।

समाज भी इस स्थिति के लिये कहीं न कहीं दोषी है। कोई भी खुलकर नहीं बोलना चाहता, सभी अपने छोटे-मोटे स्वार्थ के चलते मूक एवं पंगु बन गये हैं। एक समय था जब समाज में ऐसे व्यक्ति थे जो मुंह पर कहने का साहस रखते थे कि 'तुम गलत कर रहे हो, समाज यह बर्दाशत नहीं करेगा।' वे समाज के पंच थे, आज तो हमारा समाज 'पंचहीन' हो गया है। सभी कांच के घर में पत्थरों से डर कर बैठे हैं। ●

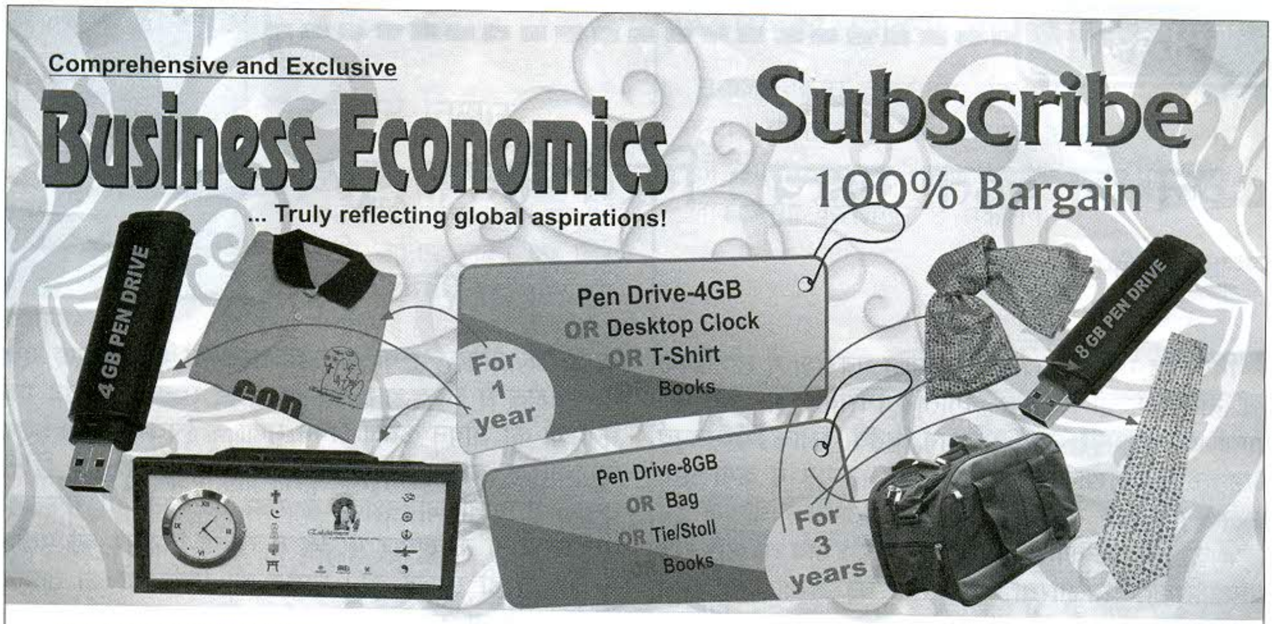

Subscribe Business Economics :

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1440/-	1440/-	1440/-	216	144	☐ 8GB Pen Drive OR ☐ Bag OR ☐ Tie/Stoll OR ☐ Books
☐	1 Year	24	480/-	480/-	480/-	72	48	☐ 4GB Pen Drive OR ☐ Desktop Clock OR ☐ T-Shirt OR ☐ Books
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ Exclusively for Students/Institutions
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ EXCLUSIVELY FOR SENIOR CITIZENS

For 1 year Book of choice upto ₹ 480 | For 3 years Books of choice upto ₹ 1440

Business Economics Subscription Form

Name : Mr./Ms. ____________________

Address : ____________________

____________________ City/District: ____________________

State: ____________________ Country: ____________________ Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

E-mail : ____________________ Mobile : ____________________ Landline : ____________________ STD CODE

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. ____________________ dated: __________ for Rs. __________ drawn on: ____________________

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature: ____________________ date: ____________

Mail this subscription form along with your Cheque / DD to : Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : Kolkata : Shaonli Majumder : 033 2223-0368 • **Mumbai :** Rajendra Singh : 90290 84951
New Delhi : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima :** Povotso Lohe : 94360 05889

Lucky DRAW

QUARTERLY LUCKY DRAW FOR THE SUBSCRIBERS :
1st Prize : INR 2000/- ● 2nd Prize : INR 1000/- ● 3rd Prize : INR 500/-

अध्यक्षीय

तीर्थनगरी हरिद्वार

संस्कृति एवं संस्कारों की संवाहक

– हरि प्रसाद कानोड़िया

सबसे पहले राम राम और राधे-राधे!

लोग सोचते है कि आखिर राम-राम अथवा राधे राधे का इतना महत्व क्यों है तो पहले तों यह समझ ले कि राम मर्यादा का प्रतीक है और सत्य का आधार तथा राधे लक्ष्मी स्वरूपा है। मानव जीवन में दोनों का ही बराबर का महत्व है। जीवन में राम बनना जरुरी है। काका कालेलकर ने भी कहा है – "जो रमता नहीं वो राम नही" और राम बनने के लिए एक जगह बैठने से काम नहीं होगा बल्कि दीन-दुनिया का भ्रमण भी करना होगा, रमना होगा। जीवन के विभिन्न पहलूओं को समझना होगा। कुसंगतियों से दूर रह कर सत्य की राह पर चलना ही मानव जीवन का आधार है और इसके लिए सबसे जरुरी है तीर्थांचलों का भ्रमण।

कहने को तो सम्पूर्ण भारतभूमि देवों की भूमि है और पूजनीय है। हमारे यहाँ धरती को मॉ एवं आसमान को पिता की गरिमा प्राप्त है। लेकिन इसके बावजूद कुछ प्रदेश अथवा प्रांत ऐसे है जिनकी महिमा अतुलनीय है। हालांकि कलकत्ता अथवा कोलकाता की काली की नगरी माना गया है तथा यहॉ एक से बढ़कर एक भव्य एवं विशाल मंदिर भी है। बावजूद, कल-कल बहती हुगली गंगा के तट पर बसे कोलकाता शहर का वो धार्मिक महत्व नहीं है जो हरिद्वार, उज्जैन, नासिक आदि शहरों को प्राप्त है। ये तीर्थनगरी कहलाते है और इनकी महिमा पुराणों तक में वर्णित है कि यहॉ पर स्नान-ध्यान से ही जन्म-जन्मांतर के पापों से मुक्ति मिल जाती है।

ऐसी ही पावन भूमि है हरिद्वार की भी। यहॉ की माटी तक में मर्यादा व्याप्त है। मानों कण-कम में राम बसे हों। पावन गंगा के रमणीय तट पर बसी तीर्थनगरी हरिद्वार एवं उससे लगभग २५-३० किलोमीटर के अंतराल पर बसा ऋषिकेश दोनो हीं प्रकृति की अद्भुत रचना है। यहॉ की भूमि पर पग पड़ते ही मानो अंग-अंग ताजगी व स्फूर्ति से भर जाते है। भीड़-भाड़ भले ही हो, इसके बावजूद यहा एक मौन शांति व्याप्त है।

अप्रैल में तीर्थनगरी हरिद्वार जाने का सौभाग्य मिला। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की सर्वोच्च नीति निर्धारक अखिल भारतीय समिति एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी की संयुक्त बैठक तीर्थनगरी हरिद्वार में हुई थी। देश भर के कई प्रांतों के लोग वहॉ पहुँचे थे। सचमुच, यह यात्रा दूसरी तमाम यात्राओं से भिन्न रही। तीर्थनगरी हरिद्वार का विशेष महत्त्व है, यह हमारी संस्कृति एवं संस्कारों का संवाहक है। वहॉ पहुँचते ही इस बात का एहसास हो गया क्योंकि जिस अपनेपन से हरिद्वार में उत्तराखण्ड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारिओं एवं सदस्यों ने हमारी आवभगत की, वो तीर्थनगरी हरिद्वार की धरती का ही पुण्य प्रताप हो सकती है। यहॉ बहती कल-कल गंगा में स्नान करने से न सिर्फ तन की बल्कि मन की भी शुद्धि हो जाती है। सचमुच, ऐसी तीर्थनगरी में बार-बार जाने का मन होता है। धन्य है वे लोग जिन्हें तीर्थनगरी हरिद्वार में वास करने का सुयोग मिला है। ●

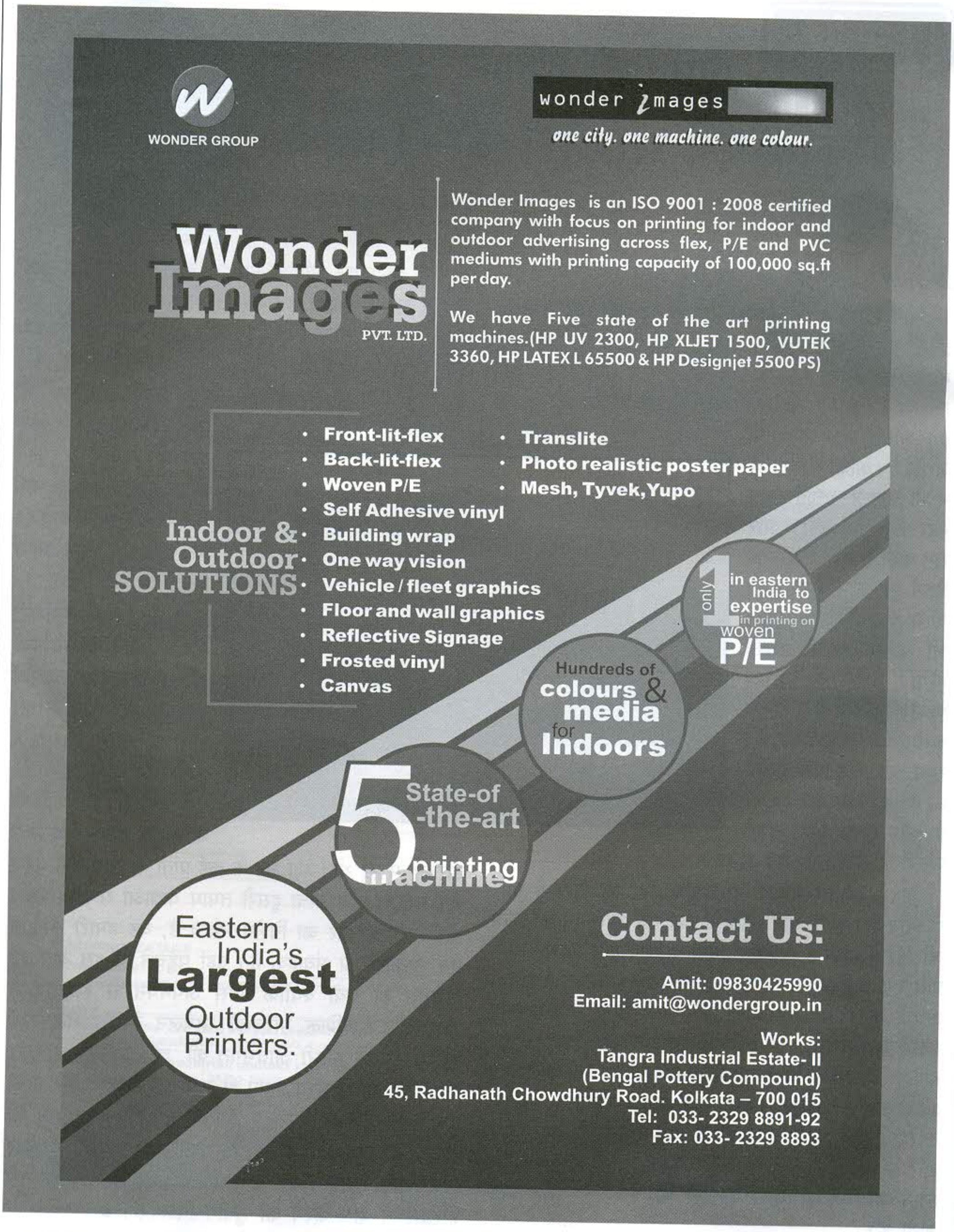
WONDER GROUP
wonder images
one city. one machine. one colour.
Wonder Images PVT. LTD.
Wonder Images is an ISO 9001 : 2008 certified company with focus on printing for indoor and outdoor advertising across flex, P/E and PVC mediums with printing capacity of 100,000 sq.ft per day.
We have Five state of the art printing machines.(HP UV 2300, HP XLJET 1500, VUTEK 3360, HP LATEX L 65500 & HP Designjet 5500 PS)
Indoor & Outdoor SOLUTIONS
Front-lit-flex
Back-lit-flex
Woven P/E
Self Adhesive vinyl
Building wrap
One way vision
Vehicle / fleet graphics
Floor and wall graphics
Reflective Signage
Frosted vinyl
Canvas
Translite
Photo realistic poster paper
Mesh, Tyvek, Yupo
only 1 in eastern India to expertise in printing on woven P/E
Hundreds of colours & media for Indoors
5 State-of -the-art printing machine
Eastern India's Largest Outdoor Printers.
Contact Us:
Amit: 09830425990
Email: amit@wondergroup.in
Works:
Tangra Industrial Estate- II
(Bengal Pottery Compound)
45, Radhanath Chowdhury Road. Kolkata – 700 015
Tel: 033- 2329 8891-92
Fax: 033- 2329 8893

तीर्थनगरी में बैठक होने से कार्य की लालसा तीव्र होती है

– **सन्तोष सराफ**, राष्ट्रीय महामंत्री

८ अप्रैल २०१२ को प्रसिद्ध तीर्थनगरी हरिद्वार में अखिल भारतीय समिति एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक नवगठित उत्तराखंड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में संपन्न हुई। गत वर्ष ३ सितम्बर २०११ को पुरी के निकट भुवनेश्वर में अखिल भारतीय समिति की बैठक हुई थी। भुवनेश्वर पुरी के सन्निकट होने के कारण भगवान जगन्नाथ का वास स्थल है, वहीं हरिद्वार क्षेत्र का भी खास महत्व है। हरिद्वार में पुण्य-प्रवाहिनी गंगा अविरल बहती है। हमारे देश में नदियों को संस्कृति का संवाहक माना गया है। नदियां हमारे मानस के साथ अन्तरंग रूप से जुड़ी हुई है। मुझे तीर्थ क्षेत्र की थोड़ी विवेचना करना यहा इसीलिए जरूरी लगा क्योंकि अखिल भारतीय समिति, सम्मेलन की नीति निर्धारक समिति है तथा महत्वपूर्ण समिति होने के कारण दोनों ही जगह इस समिति के लिए अनुकूल थी।

भुवनेश्वर बैठक में नयी शाखा स्थापित करने, सदस्यता बढ़ाने, सादगी का पालन करने एवं फिजूलखर्ची रोकने पर सार्थक बहस हुई थी। नयी शाखा कब, कहां, कैसे खोली जाए इस विषय पर विचार-विमर्श चला। सदस्य सम्मेलन की रीढ़ है अतः नये सदस्य सम्मेलन से कैसे जोड़े जाएं बैठक में इसके बारे में चर्चा चली। बेमतलब का खर्च या दिखावापन समाज को किस कदर लीलता जा रहा है, इस दोष से बचने के उपाय पर भी बैठक में चर्चा चली।

मेरा यह मानना है कि फिजूलखर्ची पर समय रहते यदि हमलोग लगाम नहीं लगाएंगे तो समाज विनाश के कगार पर पहुंच जाएगा। समाज में तामझाम से हो रहे शादी समारोह और धार्मिक कथा आयोजन में सादगी नहीं बरती गयी तो समाज आर्थिक रूप से खोखला हो जाएगा। खोखलेपन का परिणाम यह होगा कि समाज में आर्थिक विषमता की खाई चौड़ी हो जाएगी।

हरिद्वार की बैठक में देश के विभिन्न प्रांतों से अखिल भारतीय समिति के सदस्य भाग लेने पहुंचे थे। समिति के सदस्यों ने सम्मेलन को समाजोपयोगी कैसे बनाया जाए इस विषय पर सुझाव दिए। सम्मेलन को और भी कैसे चुस्त-दुरुस्त बनाया जाए इसके बारे में सदस्यों ने सुझाव दिए। बैठक में भाग ले रहे प्रांतीय अध्यक्ष और मंत्री ने प्रांतीय गतिविधि की जानकारी दी।

हरिद्वार की तरह देवभूमि में बैठक होने से हमारे अंदर का संस्कार जाग्रत हो उठता है। ऐसी जगह में बैठक होने से सांगठनिक विषयों पर चर्चा तो होती ही है साथ ही कुछ आध्यात्मिक लाभ भी मिलता हैं। संगठन को बलशाली बनाना हम सबका एकमेव लक्ष्य है अतः पुण्य क्षेत्र में हमलोग यदि संगठन को मजबूत बनाने का संकल्प लें तो निश्चय ही उसका सकारात्मक फल मिलेगा। मैं तो कहूंगा कि हरिद्वार की तरह अन्य तीर्थ क्षेत्र में आगामी बैठक करने से लक्ष्य भेदने का निर्णय लेकर ही बैठक करेंगे क्योंकि ऐसे क्षेत्र में मनोबल बढ़ता है, कार्य करने की लालसा और भी तीव्र होती है।

हरिद्वार बैठक में संगठन को मजबूत करने जैसे पक्षों पर बातचीत तो हुई ही साथ ही "समाज का बदलता स्वरूप" विषय पर संगोष्ठी भी आयोजित की गई। समय बदलने के साथ ही समाज में किस तरह परिवर्तन आ रहा है इस विषय पर वक्ताओं ने सुझाव रखे। मेरा मानना है कि अखिल भारतीय समिति की बैठक में समाज के ज्वलन्त विषयों पर संगोष्ठी जरूर होनी चाहिए। संगोष्ठी इसीलिए होनी चाहिए कि उस मंच पर पूरे देश से समिति के सदस्य भाग लेने आते हैं तथा विचार रखते हैं एवं सुनते हैं। बैठक में ऐसी गोष्ठी से लाभ यह होता है कि समाज के गुण-अवगुण पर चर्चा होगी, जिससे खामियों को सुधारने का मौका मिलेगा। परिवर्तन की आंधी के बीच हम अपने संस्कारों को सुरक्षित रखते हुए बदलाव के हमराही कैसे बनें गोष्ठी में इन विषयों पर चर्चा होगी।

तीर्थ क्षेत्र का विशिष्ट महत्व है। आधुनिकीकरण की पागल दौड़ में संस्कृति एवं सभ्यता पर तीखे अक्रमण हो रहे है। समाज शास्त्रियों का मत है कि किसी भी समाज को यदि जड़ मूल से विनाश करना हो तो उसकी संस्कृति एवं संस्कार को नष्ट कर दो। यहां इसका उल्लेख इसीलिए आवश्यक जान पड़ता है क्योंकि धार्मिक नगरी हमारे संस्कृति एवं संस्कार का वाहक है। भुवनेश्वर और हरिद्वार की तरह पुण्य नगरी में प्रवेश करते ही प्रसुप्त संस्कार जाग्रत हो उठता है। सम्मेलन समाज की संस्कृति एवं पूर्वजों से प्रदत्त संस्कार की रक्षा करने का प्रबल पक्षधर रहा है अतः धर्मनगरी में बैठक होने से हमारा दो तरह का हित होता है, एक अपने संस्कार की रक्षा होती है एवं दूसरा बैठक में समाज से जुड़े मुद्दों पर चर्चा होती है।

समाज में यदि विसंगति आ गयी है तो उसे दूर करने के उपाय पर भी चर्चा की जाती है। समाज को एक संदेश जाता है कि समग्र समाज हित में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन कमर कसकर तैयार है।

नवगठित उत्तराखंड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन ने हरिद्वार में बैठक का आतिथ्य कर हमारे सामने एक उदाहरण पेश किया है। इस प्रान्त का गठन हुए अभी एक वर्ष भी पूरे नहीं हुए हैं किंतु स्थापना के छोटे से कालखंड में ही इस प्रान्त ने हरिद्वार में अखिल भारतीय समिति एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक कर महत् कार्य कर दिखाया है। इस शाखा के पदाधिकारी और सदस्य ने जिस जिम्मेवारी के साथ बैठक का आयोजन किया उसके लिए बधाई। ●

IIISD

A Gateway to Careers

SREI Foundation

"Educate Morally & Technically"
— Swami Vivekananda

Swami Vivekananda Merit Scholarship upto 100%

Quality Higher Education at lowest prices
– a corporate social responsibility

3 Yrs. **BBA** ₹ 75,000	2 Yrs. **MBA + PGPM** ₹ 85,000
3 Yrs. **BCA** ₹ 75,000	2 Yrs. **MBA (Hospital Admin.)** ₹ 95,000

ELIGIBILITY & SELECTION

FOR MBA

- BACHELOR'S DEGREE IN ANY DISCIPLINE
- APPEARING FOR FINAL DEGREE EXAMINATION
- GROUP DISCUSSION
- PERSONAL INTERVIEW
- ★ APPLICANTS WITH CAT / MAT / XAT ARE PREFERRED

FOR BBA & BCA

- 10 + 2 PASSED FROM ANY HIGHER SECONDARY BOARD/COUNCIL

Assistance for placement

Eminent Faculty
Regular / Weekend Classes
AC Classrooms/Hostel

Achieve your Aspiration ...
... be a **Corporate Leader !**

Complimentary Courses with MBA, BBA, BCA :

- Spoken English
- Foreign Languages
- Soft Skills Training from HCL - CDC
- ERP Training (Microsoft Certified)
- Company Secretaryship / Chartered Accountancy / Administrative Services
- Entrepreneurship Development

Other Courses :

- Company Secretaryship
- Advocateship
- E-Tuition
- Montessori Teacher Training (1 Year Diploma)
- Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit and Hindi
- NDA / CDS – UPSC Examinations and SSB Interview
- Certificate Course in Computer Applications
- Advanced Diploma in Financial Management
- Entrepreneurship Development
- Vocational & Technical Training
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelim and Main)
- WBCS (Executive) and Judicial Services Examination (Prelim and Main)
- Chartered Accountancy (CPT, IPCC & Final)
- Diploma in Banking and Finance
- Preparatory course for Entrance Examination of MD, MS, MRCP (Medicine) – Part-I and DNB – Part-I

Recognised by UGC, Ministry of HRD, Govt. of India, Approved by Joint Committee of UGC, AICTE & DEC

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

Unit - I

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in
Website : www.iisdedu.in

Unit - II

9, Syed Amir Ali Avenue, 5th Floor
Kolkata- 700017, Ph : 4001 9894
E-Mail : iisdunit2@gmail.com
Website : www.iisdedu.in

धार्मिक बनें, धर्मभीरु नहीं

– **संजय हरलालका**, सुयुक्त मंत्री

आजकल धार्मिक आयोजनों का बहुत बोलबाला हो गया है। जिस शहर या गली में देखो, कोई न कोई धार्मिक संस्था का परचम लहराता मिल जायेगा। देश के जिस किसी भी मन्दिर में जाओ, धर्म के नाम पर दुकानदारी का परिचय हो जायेगा। मन्दिर के पण्डे हों या पुजारी, सभी भगवान के नाम पर अपनी-अपनी दुकान खोल कर बैठे हैं। इसी का लाभ ले रहे हैं कथा एवं प्रवचन के नाम पर अपनी दुकान खोल कर बैठे कुछ तथाकथित संत। धर्मभीरु जनता से लाखों रुपये अनुदान के नाम पर लेकर ये कथाकार अपनी तिजोरी भरने में लगे हैं। विगत दिनों में कई ऐसे संतों और बाबाओं का नाम सुर्खियों में छाया रहा जो न सिर्फ धर्म के नाम पर हमारे देश की भोली-भाली धर्मभीरु जनता को ठग रहे हैं बल्कि कई तो इससे भी आगे सेक्स क्रिया तक में लीन रहे हैं। इनमें संत आशाराम बापू, नित्यानन्द महाराज से लेकर वर्तमान के सबसे चर्चित निर्मल बाबा तक का उल्लेख किया जा सकता है। बावजूद इसके हमारे देश की धर्मभीरु जनता की मेहरबानी से आज भी इनकी दुकानदारी रुपी बादशाहत कायम है।

इन पण्डों, पुजारियों एवं तथाकथित संतों की तर्ज पर अनेक लोगों ने कोई न कोई धार्मिक संस्था बनाकर अपनी दुकान खोल ली है। कोलकाता महानगरी में तो मानों सभी लोग धार्मिक हो गये हैं। सैंकड़ों करोड़ रुपया प्रतिवर्ष धार्मिक आयोजनों के नाम पर आडम्बर, दिखावा व प्रदर्शन में खर्च हो रहा है। जो व्यक्ति जिस देवता को मानता है, वह भला उस देवता के नाम पर होने वाले धार्मिक आयोजन में चन्दा देने से कैसे मना कर सकता है? भगवान नाराज जो हो जायेंगे? उनकी इसी भावना के कारण धर्म की दुकान चला रहे लोगों की चान्दी कट रही है।

अब तक मैंने जो कुछ लिखा, उससे आप यह अंदाजा लगा रहे होंगे कि मैं नास्तिक प्रवृत्ति का व्यक्ति हूँ इसलिए ऐसी बातें लिख रहा हूँ। जबकि ऐसा कतई नहीं है।

अगर आप धर्मग्रन्थों का अवलोकन करें, उन्हें ध्यान से पढ़ें तथा सच्चे गुरुओं की वाणी को आत्मसात् करें तो आपको पता चलेगा कि धार्मिक होना अलग बात है और धर्मभीरु होना अलग। क्या किसी भी धर्मग्रन्थ या गुरु ने यह कहा है कि भगवान को छप्पन प्रकार के व्यंजनों का भोग लगाए, उन्हें विभिन्न प्रकार के फूलों से सजाने से ही वे प्रसन्न होते हैं? अगर ऐसा है तो भीलनी के झूठे बेर खाकर भगवान राम खुश नहीं होते बल्कि उसे श्राप दे देते।

हम सभी जानते हैं कि भगवान तो भाव के भूखे होते हैं बावजूद इसके हम चकाचौंध भरी जिन्दगी में भगवान को भी चान्दी के सिंहासन पर तोल रहे हैं। क्या यही धार्मिकता है?

नर सेवा को ही नारायण सेवा बताने वाले ईश्वर के कथनों को ही हमनें भुला दिया है। अगर कोई व्यक्ति भूख से तड़प कर या ईलाज के अभाव में मर रहा हो तो भी हम अपने धार्मिक होने का ढोंग दिखाते हुए तीर्थयात्रा पर तो निकल जायेंगे लेकिन उस व्यक्ति के प्रति झूठा अफसोस जाहिर करने के अलावा ऐसा कोई कदम नहीं उठाते जिससे कि यह लगे कि हमारे मन में धार्मिक भावना है।

अपने ईश के प्रति भक्ति होना कतई बुरा नहीं है किन्तु क्या घर में बैठे ईश रुपी वृद्ध माता-पिता या दादा-दादी के प्रति हमारा कोई कर्तव्य नहीं है? जीवित ईश की अवहेलना कर मन्दिरों में की जाने वाली पूजा से क्या भगवान प्रसन्न होते हैं?

हॉल ही में कोलकाता के विख्यात कालीघाट मन्दिर में व्याप्त पण्डों की मनमर्जी के खिलाफ प्रह्लादराय गोयनका द्वारा हाईकोर्ट में दायर की गई जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए माननीय न्यायाधीश ने मन्दिर के गर्भगृह में दो पुजारियों के अलावा सभी के प्रवेश पर रोक लगा दी। हाईकोर्ट को ऐसा आदेश क्यों देना पड़ा? क्योंकि यहां पर लोगों की धार्मिक भावनाओं का खुलेआम शोषण हो रहा था।

घोर कलयुग में जी रहे हमलोगों को आज इस पर चिन्तन करना होगा। पूरे देश में, मन्दिर हों या धार्मिक आयोजन, आप और हम जैसे श्रद्धालुओं की बदौलत ही चल रहे हैं। ऋषि-मुनियों के हमारे देश में यज्ञ-हवन-पूजा-पाठ की परम्परा आदि काल से चली आ रही है जिसे आगे भी जारी रखना है किन्तु धार्मिक भीरुता के कारण नहीं, धार्मिक भावना के साथ।

आजकल क्रूजों पर कथाओं एवं प्रवचनों का नया सिलसिला शुरु हुआ है। मन्दिर में जाकर १० मिनट भी भगवान के सामने मत्था न टेकने वाले लोग क्रूजों पर कथा श्रवण करने जाते हैं। किसी भी कार्य के लिए स्थान का बहुत बड़ा महत्व होता है इसीलिए कहते हैं स्थानम् प्रधानम्। कथा श्रवण हो या ईश का ध्यान, उसके लिए प्रयुक्त स्थान पर ही मन स्थिर हो सकता है। क्या सिनेमा हॉल में सिनेमा देखते वक्त हम भगवान के नाम का स्मरण कर सकते हैं? नहीं, क्योंकि वहाँ हमारा ध्यान सिनेमा की तरफ है। उसी तरह क्रूज में ईश का ध्यान नहीं हो सकता, वहाँ समुद्र की लहरों का आनन्द ले सकते हैं। लेकिन धर्म की दुकान खोलकर बैठे लोगों एवं आर्थिक रूप से सम्पन्न लोगों ने मिलकर इस दुकानदारी को भी अमली जामा पहना ही दिया है।

आज हमें गम्भीरता से इन सब बातों पर चिन्तन करना होगा। हमारी अगली पीढ़ी ऐसे ही धर्म से विमुख होती जा रही है। अगर हमनें उन्हें आडम्बर व दिखावा परोसा तो वह दिन दूर नहीं होगा जब धार्मिक आयोजनों में भी कॉकटेल पार्टियों का बोलबाला होगा। क्योंकि हम उन्हें जैसा आईना दिखायेंगे, वे तो वहीं सीखेंगे। इसलिए धर्मभीरु बनकर भगवान से डरने की बजाय उन्हें अपने कर्मों के माध्यम से अपना सखा बनाईये। फिर देखियेगा, बिना कोई तीर्थ किये भी कैसे भगवान अपनी ममता की वर्षा आप पर करेंगे। ●

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बद्रीप्रसाद भीमसरिया को श्रद्धांजलि

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बद्री प्रसाद भीमसरिया का २८ मार्च २०१२ की सुबह ४.०० बजे स्वर्गवास हो गया है। वे बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, बिहार चेम्बर ऑफ कामर्स, बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी चिकित्सा समिति, व्यवसायिक संघ जैसे कई संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े थे। श्री भीमसरिया के पार्थिव शरीर को इनके पैतृक निवास स्थान बड़हिया के लिये प्रस्थान किया गया। प्रस्थान करने के पहले इन्हे बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, डाक बंगला रोड स्थित कार्यालय भवन में लाया गया और शोकाकुल सम्मेलन सदस्यों ने उनके पार्थिव शरीर पर माल्यार्पण कर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। शोकाकुल सदस्यों में श्री रामपाल अग्रवाल "नूतन", श्री कमल नोपानी, श्री राजेश बजाज, श्री शिवकरण दूदवेवाला, श्री राजेश सिकारिया, श्रीमती सुषमा अग्रवाल, श्री निर्मल झुनझुनवाला, श्री महेश जालान, श्री अंजनी सुरेका, श्री गणेश खेमका, श्री पवन भगत, श्री प्रभु दयाल भरतीया, श्री महावीर बिदासरिया, श्री बनारसी प्रसाद झुनझुनवाला आदि उपस्थित थे।

उनके आकस्मिक निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा सोमवार, २ अप्रैल २०१२ को कोलकाता चेंबर ऑफ कॉमर्स में एक शोकसभा का आयोजन किया गया। स्व. भीमसरिया की तस्वीर पर माल्यार्पण के पश्चात् शोकसभा की अध्यक्षता करते हुए सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि वह गहरी सूझ-बूझवाले एक कर्मठ व्यक्ति थे। बद्री बाबु से अपने वर्षों के संबंधों की चर्चा करते हुए श्री शर्मा ने कहा कि सदैव हँसमुख सही मायने में अजातशत्रु थे। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार ने कहा कि उन्होंने कभी किसी पद की लालसा नहीं रखी एवं चेहरे पर हमेशा मुस्कान रहती थी। अन्य उपाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश खंडेलवाल ने कहा कि हमने एक निष्ठावान समाज सेवक को खो दिया। संयुक्त राष्ट्रीय मंत्री श्री संजय हरलालका ने कहा कि वो एक अच्छे अभिभावक होने के साथ ही एक अच्छे मित्र भी थे। राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ ने शोक प्रस्ताव पढ़ा। दो मिनटों के मौन के पश्चात् सभा की समाप्ति हुई। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री श्री कैलाशपति तोदी, श्री घनश्याम शोभासरिया, श्री ओम लडिया, श्री प्रेमचंद सुरेलिया समेत कई गणमान्य लोगों ने दिवंगत बद्रीप्रसाद भीमसरिया को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

सामाजिक कार्यकर्ता गोविन्द शर्मा का देहावसान

सुपरिचित सामाजिक कार्यकर्ता एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सदस्य श्री गोविन्द प्रसाद शर्मा का गत १८ अप्रैल २०१२ को आकस्मिक देहावसान हो गया। सम्मेलन उनकी आत्मा की शांति के लिये परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए उनके परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

अखिल भारतीय समिति की बैठक : हरिद्वार में

समाज सुधार में युवा एवं महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका

– सम्मेलन अध्यक्ष कानोड़िया –

मंचस्थ (दाये से बाये) – श्री जय प्रकाश मुंधड़ा, श्री कैलाशपति तोदी, श्री आत्माराम सोंथलिया, श्री संतोष सराफ, श्री हरिप्रसाद कानोड़िया (राष्ट्रीय अध्यक्ष), श्री रामअवतार पोद्दार, श्री रमेश चन्द गोपीकिशन बंग, दिलीप गांधी एवं श्री विजय गुजरवासिया

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की सर्वोच्च नीति निर्धारक अखिल भारतीय समिति एवं कार्यकारिणी समिति की संयुक्त बैठक ८ अप्रैल २०१२ को सम्मेलन के नवगठित प्रांत उत्तराखंड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में तीर्थ नगरी हरिद्वार में सम्पन्न हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता की सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने। स्वागत भाषण दिया प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष रंजीत जालान ने।

सर्वप्रथम उत्तराखंड के प्रांतीय अध्यक्ष श्री रंजीत जालान ने अखिल भारतीय समिति एवं कार्यकारिणी समिति के सदस्यों एवं मंचस्थ अतिथियों का माल्यार्पण कर अभिनन्दन किया। अपने स्वागत भाषण में श्री जालान ने उत्तराखंड शाखा का परिचय देते हुए कहा कि अभी यह संस्था एक नवजात शिशु है जिसका एक साल भी पूरा नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि आप लोगों के मार्गदर्शन से हमने उत्तराखंड की पावन भूमि पर बीज तो बो दिया है, अब साथीगण इसे सींचे, आगे बढ़ाए। तदोपरांत सर्वसम्मति से गत वर्ष की कार्यवाही पारित हुई। इसके बाद सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ ने महामंत्री की रिपोर्ट के माध्यम से सालभर के कार्यक्रमों का विस्तृत ब्यौरा पेश किया एवं राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया ने विगत वर्ष के आर्थिक लेखा–जोखा की समीक्षा पेश की।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में सम्मेलन सभापति श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने धर्मनगरी हरिद्वार की महिमा की चर्चा करते हुए कहा कि यह स्थान गंगा का स्वरूप है। यह देवभूमि हमें हमारे संस्कारों की याद दिलाती है। उन्होंने संगठन की मजबूती के लिए सभी से सदस्यता बढ़ाने की अपील करते हुए कहा कि हमारे भीतर एक अग्नि होनी चाहिए कि सदस्यता कैसे बढ़े? हिमालय की ऊंचाई तक कैसे पहुचा जाए, यह सभी को सोचना है। "सादगी–क्रांति" लानी होगी। उन्होंने महिला शक्ति एवं युवा शक्ति से भी "सादगी--क्रांति" का आह्वान किया। साथ ही साथ मारवाड़ी समाज को राजनीति में भागीदारी के लिए प्रेरित किया। मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ललित गांधी ने कहा कि सम्मेलन के मार्गदर्शन से ही युवा मंच को प्रेरणा मिलती है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन पिछले ७७ वर्षों से समाज को जो नेतृत्व प्रदान कर रहा है वह सारे राष्ट्र का गौरव है। श्री गांधी ने बताया कि युवा मंच आज देश भर में २५० एंबुलेंस के माध्यम से दूर-दराज के गांवों तक अपनी निःशुल्क सेवाएं प्रदान कर रहा है।

सभा को सम्बोधित करते उत्तराखण्ड प्रांत के अध्यक्ष श्री रंजीत जालान

उत्तराखंड प्रांत के महामंत्री श्री रंजीत टिबड़ेवाल ने बताया कि संस्था को पूरे हुए अभी एक साल भी नहीं बीता है तदापि कई सेवामूलक कार्यक्रम हाथों में लिए हैं-- गरीबों में कंबल वितरण एवं स्वास्थ्य शिविर। भावी कार्यक्रम के बारे में उन्होने सदस्यात विस्तार के साथ स्थापना दिवस पर कंबल वितरण की घोषणा क। साथ ही गरीब कन्याओं के विवाह में भी भागीदारी की बात कही।

बिहार प्रांत के महामंत्री श्री राजेश बजाज ने अपनी बात रखते हुए कहा कि अब तक २५३ शाखाओं में ५८ के दौरे हो चुके हैं। उन्होंने कहा कि बिहार में हरित क्रांति लाने के लिए एक लाख पौधे लगाने पर विचार चल रहा है। श्री बजाज ने बताया कि बीते जाड़े में विभिन्न शाखाओं के माध्यम से जरूरतमंद लोगों के बीच लगभग १० हजार कंबलें बांटी गयी तथा २५० छात्राओं को निःशुल्क साईकिल प्रदान की गयी। प्रादेशिक सम्मेलन की ओर से "समाज गौरव गान" की एक सीड़ी भी बनबाई गयी है। श्री बजाज ने आग्रह किया कि सीड़ी को सभी बैठकों की शुरुआत से पूर्व बजाया जाए। सीड़ी का विमोचन करते हुए सम्मेलन अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने कहा कि इसका एक-एक शब्द महत्वपूर्ण है।

महाराष्ट्र के प्रांतीय अध्यक्ष डॉ. जय प्रकाश मूंधड़ा ने महाराष्ट्र की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस साल सबसे बड़ा कार्यक्रम नासिक में युवा मंच ने किया। जिनकी उम्र ४५ से पार जा चुकी है उन्हें अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन से जुड़ना चाहिये। उन्होने कहा कि सदस्यता बढ़ाने के लिए शाखाएं बढ़ानी होगी और इसके लिए हम लगातार प्रयास कर रहे हैं।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया ने कहा कि संगठन ही समाज की सबसे बड़ी शक्ति है। उन्होंने कहा कि समाज में दो चीजों की बेहद जरूरत है – समाज सुधार एवं जरूरतमंदों की जरूरत को पूरा करना। श्री गुजरवासिया ने बताया कि हालांकि समाज सुधार की दिशा में हम उतना आगे नहीं बढ़ पाए हैं लेकिन जरूरतमंद लोगों की जरूरतों को पूरा करने में निःसंदेह हम सक्षम है। क्षमतानुसार निर्धन कन्याओं के विवाह पर जोर दे रहे हैं। उन्होंने बताया कि अब तक पांच कन्याओं का विवाह कराया जा चुका है तथा आगामी महिनों में भी कुछ कन्याओं का विवाह कराया जाएगा। साथ ही बच्चों को फीस एवं किताब-कॉपियों के माध्यम से सहायता दी जा रही है। सदस्यता बढ़ाने की बात भी कही।

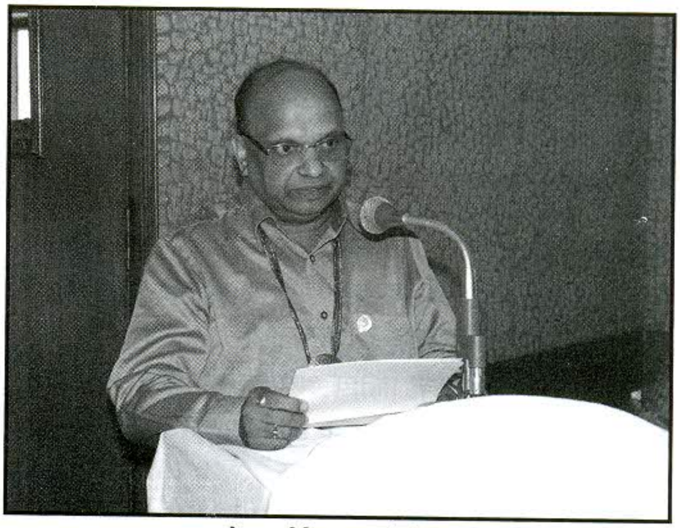

सभा को सम्बोधित करते बिहार प्रांत के महामंत्री श्री राजेश बजाज

दिल्ली शाखा के प्रांतीय महामंत्री श्री पवन गोयनका ने भावी कार्यक्रमों के तहत सदस्यता बढ़ाने एवं शैक्षनिक

कायक्रम के माध्यम से शिक्षा के विकास की बात कहीं।

मध्य प्रदेश के प्रांतीय महामंत्री श्री कमलेश नाहटा ने बताया कि मध्य प्रदेश में संस्था का गठन सन् २००१ में

सभा को सम्बोधित करते उत्तराखण्ड प्रांत के मंत्री श्री रंजीत टिबड़ेवाल

हुआ था लेकिन संस्था पिछले ४-५ साल से काफी सक्रिय है। उन्होंने कहा कि हम होली मिलन का कार्यक्रम "आदर्श होली" के रूप में मनाते हैं एवं दीपावली में उन घरों में दीप जलाते है, जहां अंधेरा होता है और यह कार्य दूर-दराज के गांवों तक किया जाता है।

छत्तीसगढ़ प्रांत के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अरुण हरितवाल ने कहा कि हर साल गांवों में ३०० कंबलें बांटी जाती है – जरूरतमंद लोगों के बीच। इसके साथ गरीब नवजात शिशुओं को बेबी कीट दिया जाता है। श्री हरितवाल ने बतया कि फिलहाल रोजाना ३० बेबी कीट लगते है तथा भावी योजना यह है कि सारे प्रदेश में यह कार्यक्रम लागू हो। बताया कि अब तक ६१ गरीब जोड़ों का सामूहिक विवाह भी कराया गया है। श्री हरितवाल ने बताया कि यही नहीं बल्कि यहां के सबसे खतरनाक नक्सली इलाके बस्तर में भी मारवाड़ी समाज का गठन किया गया है। बताया कि अब तक बस्तर में १० शाखाएं खोली जा चुकी है। रायपुर में २२ अप्रैल को होने जा रहे अधिवेशन में उन्होंने उपस्थित सभी प्रांतों के पदाधिकारयों को आने का न्यौता दिया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के संयुक्त राष्ट्रीय मंत्री श्री कैलाशपति तोदी ने सम्मेलन की वेबसाइट www.marwarisammelan.com के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि इसमें सम्मेलन के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों के नाम, पते व अन्य सम्पर्क सूत्रों सहित पूर्ण विवरण उपलब्ध है, साथ ही सम्मेलन के मुखपत्र "समाज विकास" को भी समाहित किया गया है।

"सम्मेलन डायरेक्टरी २०११-१३" का विमोचन सम्मेलन सभापति श्री हरिप्रसाद कानोड़िया के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

इसके बाद तीन प्रस्ताव रखे गए – संगठन, समाज सुधार एवं भावी कार्यक्रम।

"संगठन" की मजबूती संबंधी प्रस्ताव पढ़ा उत्तराखंड प्रांत के अध्यक्ष श्री रंजीत जालान ने एवं अनुमोदन किया पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया ने। इस प्रस्ताव पर अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री गोविंद इंदौरिया ने कहा कि इसके लिए एक कमेटी बनायी जाए एवं हर महिने – पन्द्रह दिन के अंतराल में बैठक होनी चाहिए।

बिहार प्रांत से आए श्री महेश जालान ने कहा कि शाखा एवं सदस्यता बढ़ाने के लिए एकल सदस्यता संबंधी अभी तक कोई स्पष्ट नीति नहीं बन पायी है। सम्मेलन से

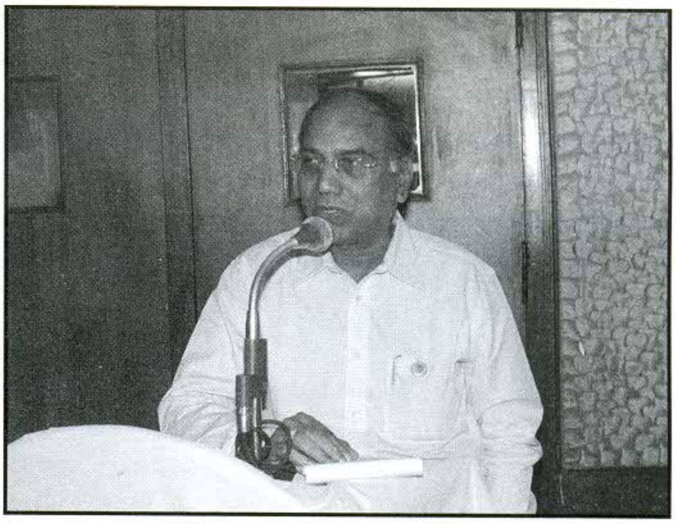

सभा को सम्बोधित करते पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया

महिलाओं एवं युवाओं को भी जोड़ा जाए तथा शाखाओं का नियमित दौरा हो।

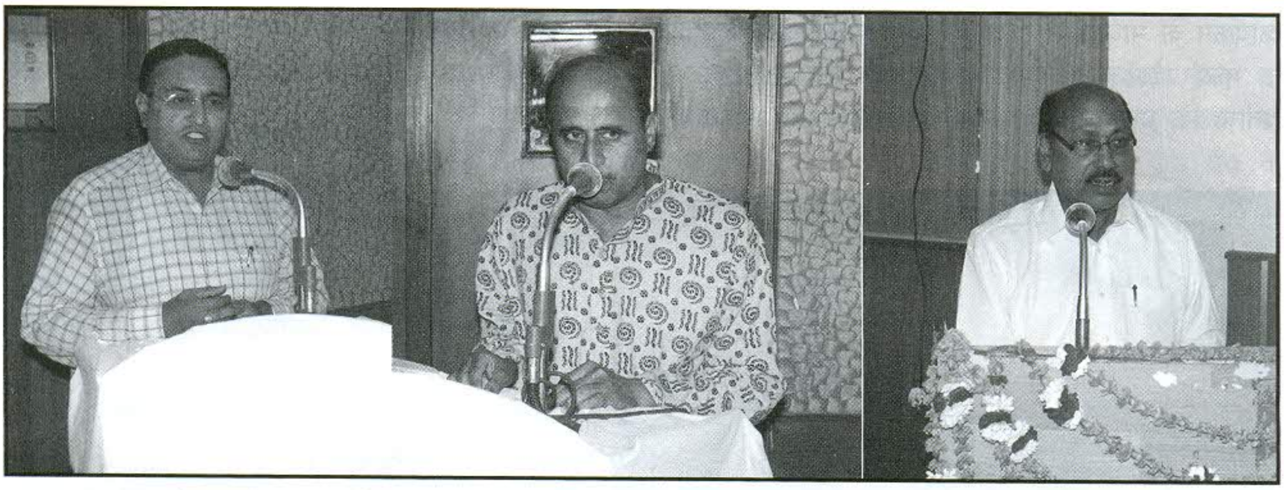

सभा मे अपनी बात रखते हुए छत्तीसगढ़ प्रांत के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अरुण हरितवाल, मध्यप्रदेश के महामंत्री श्री कमलेश नाहटा एवं उत्तराखण्ड के श्री रविकांत गप्ता

श्री प्रमोद गोयनका ने अपने विचार रखते हुए कहा कि इसके लिए एक जन सम्पर्क कमेट बनायी जाए। श्री वीरेन्द्र धोका ने पूना में बनी मारवाड़ी सम्मेलन की एक धर्मशाला का जिक्र करते हुए बताया कि आज उस पर दूसरे लोगों ने हक जमा लिया है। उन्होने कहा कि सालभर में राष्ट्रीय पदाधिकारियों के २-४ दौरे होने चाहिए। मध्य प्रदेश से पधारे श्री कमलेश नाहटा ने कहा कि सभी प्रांतों एवं शाखाओं के चुनाव एक ही समय पर होने चाहिए। दिल्ली से आए श्री पवन गोयनका ने कहा कि एकल सदस्यता पर यदि कोई ठोस निर्णय लिया जाता है तो यह एक बहुत बड़ी बात होगी। श्री गेविन्द शर्मा ने कहा कि राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर जो अभियान चल रहे हैं, उनका "ब्लू प्रिंट" सामने आना चाहिए तथा संविधान में यदि किसी प्रकार के संशोधन की आवश्यकता है तो वो भी होना चाहिए। महाराष्ट्र से पधारे श्री जय प्रकाश मूंधड़ा ने कहा कि यदि चैन सिस्टम में काम हो तो सदस्यता बढ़ाने में सुविधा मिल सकती है और इसके लिए जरूरी है कि संविधान सभी के लिए एक हो। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेशचंद गोपीकिशन बंग ने कहा कि हर प्रदेश के अध्यक्ष एवं महामंत्री को बुलाकर सदस्यता के स्वरूप पर स्पष्ट चर्चा हों। महिलाओं को आगे बढ़ाए, महिला शक्ति का फायदा लें। उन्होंने बताया कि महाराष्ट्र में महिलाएं जिस जोर शोर से कार्य कर रही है, अन्यत्र नहीं। श्री अरूण हरितवाल ने कहा कि नियमावली एक हों एवं सम्मेलन के उद्देश्य एवं विचार स्पष्ट होने चाहिए। उन्होंने

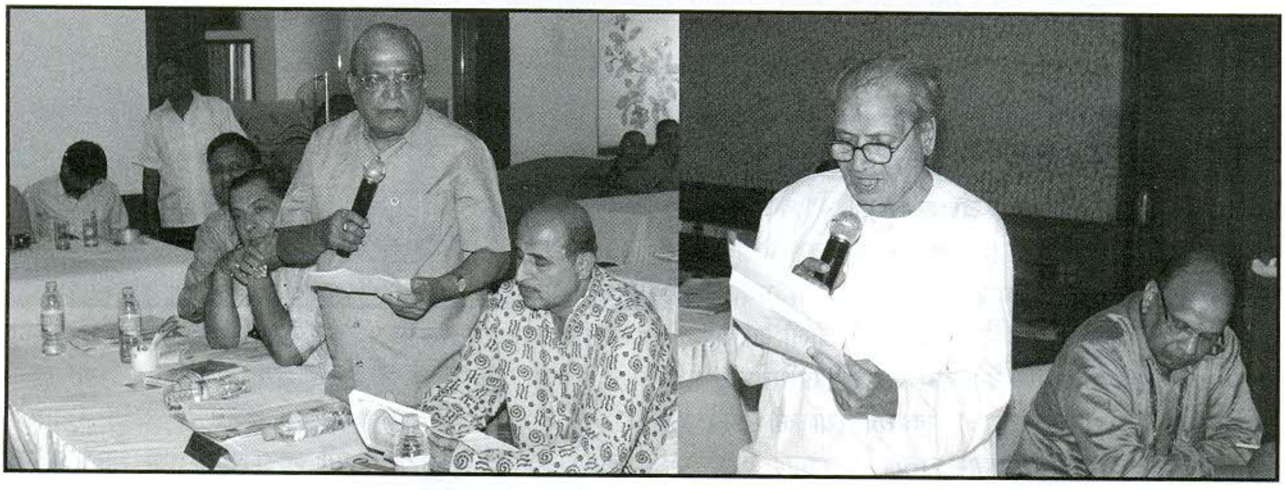

सवाल जवाब करते श्री गोविन्द शर्मा एवं श्री रामपाल अग्रवाल 'नूतन'

सम्मेलन डायरेक्टरी २०११-१३ का विमोचन करते हुए सम्मेलन अध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया, साथ में परिलक्षित है (दाये से बाये) श्री आत्माराम सोंथलिया, श्री सन्तोष सराफ, श्री रामअवतार पोद्दार, श्री रमेश चन्द गोपीकिशन बंग एवं श्री दिलीप गांधी

कहा कि इसे छपवाकर सभी को दिया जाना चाहिए। विषय प्रवर्तन करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ ने कहा कि एकल सदस्यता पर शीघ्र निर्णय लिया जाएगा एवं संविधान सभी के लिए एक होगा। उन्होंने कहा कि प्रांतो के अध्यक्ष जिलों में शाखाएं खोल सकते हैं, सम्मेलन प्रांतों में ही बसता है। सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार ने उपस्थित विभिन्न प्रांतों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों को आश्वस्त करते हुए कहा कि जुलाई में सभी प्रांतों के अध्यक्ष एवं महामंत्री को बुलाकर एकल सदस्यता पर अंतिम निर्णय लिया जाएगा। साथ ही साथ आवश्यकतानुसार संविधान संशोधन पर भी चर्चा की जाएगी।

"समाज सुधार" संबंधी प्रस्ताव सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेशचंद गोपीकिशन बंग ने पेश किया एवं अनुमोदन किया बिहार के प्रांतीय महामंत्री श्री राजेश बजाज ने। इस प्रस्ताव पर विचार व्यक्त करते हुए श्री संतोष अग्रवाल ने महंगे वैवाहिक कार्डों पर चिंता जतायी – "आखिर शादी में महंगे कार्ड क्यों?" उन्होंने कहा कि शादी पार्टी में सीमित लोग होने चाहिए एवं कॉकटेल पार्टी बंद हो। शादी के मेनु में व्यंजनों की सीमित संख्या हो। श्री प्रभात अग्रवाल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि फिजूलखर्ची करनेवालों का घेराव किया जाना चाहिए। बिहार से आए श्री प्रदीप सुरेका ने कहा कि वैवाहिक समारोहों का एक मापदंड (आचार संहिता) होना चाहिए। साथ ही "हाई टी" बंद हो। श्री ओम प्रकाश पोद्दार ने समाज सुधार के प्रस्ताव पर अपनी बात रखते हुए पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की उस बात का उल्लेख किया कि बंगाल में रहनेवाले मारवाड़ी भी बंगाल के हो गए हैं, मारवाड़ी किसी से भी कम नहीं है। श्री विश्वनाथ सिंघानिया ने "वृद्धाश्रम" शब्द पर आपत्ति जतायी एवं कहा कि ऐसे आश्रमों का नाम "श्रद्धा आश्रम" रखा जाना चाहिए क्योंकि वृद्ध व्यक्ति सभी के सम्मान का अधिकारी होता है। श्री महेश जालान ने कहा कि निमंत्रण कार्ड एवं छपाई सब मिलाकर ५० रुपए से ज्यादा का न हो। शादी में अधिकतम तीन कार्यक्रम हों एवं खाने-पीने के सामान सीमित हों। श्री कमलेश नाहटा ने बेरोजगारी पर चिंता व्यक्त की एवं कहा कि कुछ ऐसा किया जाना चाहिए ताकि समाज का एक भी व्यक्ति बेरोजगार न रहे।

"समाज सुधार" प्रस्ताव पर अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामअवतार

पोद्दार ने कहा कि यदि यह अभियान युवा व महिलाएं अपने जिम्मे लें तो समाज में सुधार ज्यादा व जल्द होगा।

भावी कार्यक्रम संबंधी प्रस्ताव पढ़ा बिहार प्रांत के पूर्व अध्यक्ष श्री रामपाल अग्रवाल "नूतन" ने एवं अनुमोदन किया मध्य प्रदेश प्रांत के महामंत्री श्री कमलेश नाहटा ने। इस प्रस्ताव पर अपने विचार व्यक्त करते हुए मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री दिलीप गांधी ने कहा कि आज काम-काज के सिलसिले में हम इतने व्यस्त हो गए हैं कि हमारे पास अपने बच्चों के लिए ही समय नहीं निकलता। हमें अपने बच्चों (भावी पीढ़ी) पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि १५-१८ साल की लड़कियों के लिए कार्यक्रम निर्धारित होने चाहिए तथा समाज के बच्चे किस तरह से राजनीति एवं प्रशासनिक सेवाओं में आगे आए, सम्मेलन को इस पर भी चिंतन करना होगा। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेशचंद गोपीकिशन बंग ने कन्या भ्रूण हत्या पर चिंता जतायी एवं कहा कि यही वजह है कि आज हमारे समाज के बच्चे दूसरे समाज में शादियां कर रहे हैं, जो कि दुर्भाग्यपूर्ण बात है।

सभा का सफल संचालन किया सम्मेलन के संयुक्त राष्ट्रीय मंत्री श्री संजय हरलालका ने एवं धन्यवाद ज्ञापन दिया राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेशचंद गोपीकिशन बंग ने।

उपस्थित समिति सदस्यगण

कार्यक्रम के दूसरे एवं खुले सत्र में **"समाज का बदलता स्वरूप"** विषयक एक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन विधिवत् दीप प्रज्वलन एवं गायत्री मंत्रोच्चारण से हुआ। इस अवसर पर मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ललित गांधी, सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, श्री रमेशचंद गोपीकिशन बंग एवं श्री संतोष अग्रवाल, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ, संयुक्त राष्ट्रीय मंत्री श्री संजय हरलालका एवं श्री कैलाशपति तोदी, पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया, महाराष्ट्र के प्रांतीय अध्यक्ष श्री जय प्रकाश मूंधड़ा उत्तराखंड प्रांत के अध्यक्ष एवं मंत्री श्री रंजीत जालान एवं श्री रंजीत टिबड़ेवाल, गायत्री परिवार के श्री राजेश जालान एवं श्री टीडी अग्रवाल, गुरुकुल विश्वविद्यालय के सह कुलपति डॉ महावीर अग्रवाल एवं गुरुजी राधेश्याम जी, रानीपुर के भाजपा विधायक श्री आदेश चौहान आदि उपस्थित गणमान्य लोगों ने समाज के बदलते स्वरुप पर अपना चिंतन पेश किया। विधायक आदेश चौहान ने कहा कि इस सम्मेलन से मारवाड़ियों को निश्चित ही एक नया मुकाम हासिल होगा। उन्होंने कहा कि युवाओं को समाज में सक्रिय भूमिका निभानी होगी तभी स्वच्छ समाजकी परिकल्पना साकार हो सकेगी। मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने कहा कि सम्मेलन का उद्देश्य मारवाड़ी समाज के लोगों को एकजूट कर सामाजिक बुराईयों के खात्मे के लिए आमजन को जागरूक करना है जिसके लिए संस्था विगत के ७७ वर्षों से प्रयासरत है। गुरुकुल विश्वविद्यालय के डॉ महावीर अग्रवाल ने सामाजिक उत्थान में नैतिक मूल्यों के महत्व पर प्रकाश डाला।

दूसरे सत्र का आरंभ एक छोटी बच्ची नेहर गर्ग के भक्ति गीत पर नृत्य साधना से हुआ। छोटी बच्ची की नृत्य साधना से प्रभावित सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कानोड़िया ने ५००० रुपए तथा युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ललित गांधी ने ११०० रुपए देकर सुश्री नेहर को पुरस्कृत एवं सम्मानित किया। स्वागत भाषण दिया हरेन्द्र गर्ग ने एवं संचालन किया रविकांत गुप्ता ने।

कार्यक्रम के अंत में सम्मेलन के संयुक्त राष्ट्रीय मंत्री श्री संजय हरलालका ने नवगठित उत्तराखंड प्रांत की नयी कार्यकारिणी की घोषणा की। धन्यवाद ज्ञापन दिया उत्तराखंड के प्रांतीय अध्यक्ष श्री रंजीत जालान ने। तदोपरांत सभी प्रांतों के प्रतिनिधियों को उत्तराखंड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से मोमेंटो एवं पुष्प गुच्छ भेंट कर सम्मानित किया गया।

अधिवेशन के उपरान्त अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के एक प्रतिनिधि मण्डल ने उत्तराखंड के माननीय मुख्यमंत्री श्री विजय बहुगुणा से देहरादून स्थित सचिवालय में भेट की। मुख्यमंत्री ने सम्मेलन के उद्देश्यों की प्रशंसा करते हुए सम्मेलन के माध्यम से उत्तराखंड में उद्योग स्थापित करने एवं पूंजी के निवेश के लिए आमंत्रित किया। प्रतिनिधिमंडल में संयुक्त मंत्रीद्वय – श्री संजय हरलालका, श्री कैलाशपति तोदी एवं श्री जयगोविन्द इन्दोरिया शामिल थे।

प्रान्तीय समाचार

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन की नवगठित कार्यकारिणी की पहली बैठक गुवाहाटी में आयोजित

कानून-व्यवस्था में सुधार की अपील

असम समेत समस्त पूर्वोत्तर भारत उग्रवाद व आपराधिक हिंसा से पीड़त है लेकिन केंद्र एवं राज्य सरकारें इस ओर

सभा को संबोधित करते पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष ओंकारमल अग्रवाल

पूरी तरह आंखें मूंदकर समस्याओं को और अधिक जटिल बनाने की कवायद में जुटी हुई है। गुवाहाटी के होटल प्राग कॉटिनेंटल में पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन की नवगठित कार्यकारिणी की प्रथम बैठक में राज्य की कानून-व्यवस्था के संदर्भ में इस आशय का प्रस्ताव ग्रहण किया गया। प्रस्ताव में कहा गया कि विगत काफी अरसे से उग्रवादियों द्वारा हिंसा, अपहरण, लूट-पाट, जबरन धन वसूली की बढ़ती घटनाओं से मारवाड़ी समुदाय के लोगों में खौफ है। प्रस्ताव में सरकार से बेरोजगारी, गरीबी तथा भ्रष्टाचार दूर करने के साथ ही कानून व्यवस्था को जल्द से जल्द सुधारने की मांग की गई। नव निर्वाचित प्रांतीय अध्यक्ष ओंकारमल अग्रवाल की अध्यक्षता में आयोजित सभा में मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ओमप्रकाश खंडेलवाल, राष्ट्रीय महामंत्री संतोष सराफ, राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री कैलाशपति तोदी तथा निवर्तमान प्रांतीय अध्यक्ष डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका भी मंच पर विद्यमान थे। इस अवसर पर नवगठित प्रांतीय कार्यकारिणी के पदाधिकारियों व सदस्यों को पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। सभा में जोरहाट में उग्रवादियों की गोलियों से दिवंगत हुए व्यवसायी व समाजसेवी कैलाश गिनोड़िया की स्मृति में दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। शाखाओं की सक्रियता, सम्मेलन समाचार का नियमित प्रकाशन, गुवाहाटी में बालिका छात्रावास का निर्माण, समाज का इतिहास लेखन सहित विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श करते हुए प्रस्ताव ग्रहण किया गया। सम्मेलन के भावी कार्यक्रमों पर भी विचार-विमर्श किया गया। इस अवसर पर विशिष्ट साहित्यकार सांवरमल सांगानेरिया का सम्मेलन की ओर से सम्मान किया गया। सभा में उपस्थित राष्ट्रीय महामंत्री संतोष सराफ ने अपने संबोधन में कहा कि पूर्वोत्तर मारवाड़ी राष्ट्रीय सम्मेलन की एक महत्वपूर्ण प्रांतीय ईकाई है। उन्होने नव निर्वाचत अध्यक्ष एवं अन्य पदाधिकारियों को बधाई एवं शुभकामना देते हुए आशा एवं विश्वास व्यक्त किया कि पूर्वोत्तर प्रांत सम्मेलन के उद्देश्यों की ओर सक्रियापूर्वक कार्य करेगा तथा उन्होने राष्ट्रीय सम्मेलन के पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री कैलाशपति तोदी

सभा को संबोधित करते अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री सन्तोष सराफ

ने कहा कि पूर्वोत्तर का मारवाड़ी समाज काफी संगठित व सक्रिय है। सम्मेलन की प्रांतीय इकाई को पूर्व की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए समस्त पूर्वोत्तर के मारवाड़ी समाज को

संगठित करने का प्रयास जारी रखना चाहिए। पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी युवा मंच के अध्यक्ष संजीव गोयल ने अपने संबोधन में कहा कि मारवाड़ी युवा मंच और मारवाड़ी सम्मेलन समूचे मारवाड़ी समुदाय के कल्याणार्थ मिल-जुलकर कार्य करता रहा है और भविष्य में भी करता रहेगा। महिला समिति की ओर से कंचन केजरीवाल ने कहा कि समाज की महिलाओं को अधिक से अधिक संख्या में जोड़ने का प्रयास किया जाना चाहिए।

सभा में उत्तर लखीमपुर, तिनसुकिया, शिलांग, बरपेटारोड, दिमापुर, शिवसागर, नगांव आदि विभिन्न स्थानों से आए प्रतिनिधियों ने भी विचार रखे। रामनिरंजन गोयनका, प्रभुदयाल जालान, लोकनाथ मोर, ओमप्रकाश चौधरी, कैलाश काबरा, प्रमोद तिवारी, विनोद रिंगानिया, विद्याकुमार पाटनी (तिनसुकिया), युगल किशोर अग्रवाल (नगांव), नवल किशोर मोर, पवन सिकरिया, शिवभगवान शर्मा, शिवकुमार अग्रवाल (शिलांग), रवि अनितसरिया, के आर चौधरी, प्रमोद स्वामी, डॉ प्रदीप जैन, पत्रकार राजकुमार झांझरी, अशोक कुमार अग्रवाल आदि ने भी सभा में अपने विचार व्यक्ति किए। प्रांतीय महामंत्री मधुसूदन सिकरिया ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

उच्च शिक्षा कोष

आवेदन पत्र आमंत्रित

समाज में उच्च एवं तकनीकी शिक्षा को प्रोत्साहित एवं सहयोग प्रदान करने हेतु अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अन्तर्गत एक **"उच्च शिक्षा कोष"** का गठन किया गया है।

मेधावी एवं जरुरतमन्द छात्र-छात्राओं से उच्च (पोस्ट ग्रेजुएट) प्रबन्धन, तकनीकी आदि शिक्षा में सहयोग के लिये आवेदन पत्र आमंत्रित है। उक्त आवेदन पत्र का प्रान्तीय अथवा जिला सम्मेलन शाखाओं द्वारा अनुमोदित होना आवश्यक है।

आवेदन पत्र में नाम, पूरा पता, फोन, ईमेल, शिक्षा, अभिभावक की वार्षिक आय के साथ जिस उच्च शिक्षा के लिये सहयोग प्रार्थित है उससे सम्बन्धित सभी विवरण, कोर्स शुल्क, सहयोग राशि आदि जानकारी भेजने की कृपा करें।

अतिरिक्त जानकारी के लिये सम्पर्क करे -

महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
१५२-बी, महात्मा गांधी रोड
कोलकाता - ७०० ००७
फोन एवं फैक्स - ०३३-२२६८०३१९।

हरिप्रसाद कानोड़िया
अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

प्रह्लाद राय अग्रवाल
अध्यक्ष, उच्च शिक्षा
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

उच्च शिक्षा कोष में मुक्त हस्त दान दें - ८०जी के अन्तर्गत कर मुक्त

Cheques may be issued in favour of "Marwari Sammelan Foundation".

प्रान्तीय समाचार

झारखण्ड

राजस्थान दिवस पर कवि सम्मेलन

झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन ने राजस्थान दिवस के उपलक्ष्य में राँची के रतनलाल जैन स्मृति भवन में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हास्य कवि श्री सुरेन्द्र शर्मा सहित कई कवियों ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। भाग लेनेवाले अन्य कविगण थे – श्री ताऊ शेखावाटी, श्री विनीत चौहान, श्री अब्दुल गफ्फार, श्री ओम तिवारी, श्री रशीद निर्मोही तथा सुश्री दीपिका माही।

कवि सम्मेलन का उद्‌घाटन झारखण्ड के राज्यपाल डा० सैयद अहमद ने किया। मुख्य अतिथि केन्द्रीय पर्यटन मंत्री श्री सुबोध कान्त सहाय तथा विशिष्ट अतिथि झारखण्ड विधानसभा के अध्यक्ष श्री चन्द्रेश्वर प्रसाद सिंह थे।

झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विनय सरावगी ने स्वागत भाषण में झारखण्ड के विकास में प्रवासी राजस्थानियों के योगदान की चर्चा की और कहा कि भविष्य में भी यह समाज अपनी भूमिका निभाता रहेगा। उन्होनें झारखण्ड में राजस्थानी को दूसरी राजभाषा का दर्जा देने की मांग की तथा केन्द्र सरकार से अनुरोध किया कि राजस्थानी को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने के लिए तत्काल कदम उठाये जाए, क्योकि केन्द्र सरकार इस सम्बंध में पहले ही स्वीकृति प्रदान कर चुकी है।

प्रान्तीय महामंत्री श्री कमल केडिया के अतिरिक्त पूर्व अध्यक्ष श्री बासुदेव प्रसाद बुधिया, श्री भागचन्द पोद्दार, श्री गोवर्धन प्रसाद गाडोदिया, श्री रतन लाल बंका, श्री चंडी प्रसाद डालमिया, श्री धर्मचन्द जैन रारा, श्री मोहन लाल सौगानी, श्री सुरेश सरावगी, श्री विश्वनाथ जाजोदिया, श्री पवन पोद्दार, श्री पवन शर्मा, श्री रवि शर्मा, श्री बसंत मितल, श्री ललीत पोद्दार, श्री प्रकाश चन्द्र बजाज, श्री रतन मोर, श्री राजेश ढांढनियां इत्यादि ने अन्य अतिथियों का स्वागत किया। कवि सम्मेलन के प्रायोजकों में स्वास्तिक समूह, श्री विजय अग्रवाल, श्री रमेश धरनीधरका, श्री अनूप सोंथलिया, श्री कमल सिंहानिया सम्मिलित थे।

राज्यपाल महोदय ने अपने सम्बोधन में भारतीय संस्कृति की एकता की चर्चा की और कहा कि कवि सम्मेलन तथा मुशायरा के माध्यम से इस मिलीजुली संस्कृति का प्रचार-प्रसार होता है। श्री सुबोध कान्त सहाय तथा श्री चन्द्रेश्वर प्रसाद सिंह ने भी विचार व्यक्त किये।

उद्‌घाटन कार्यक्रम का संचालन राँची जिला मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री वेदप्रकाश अग्रवाल ने किया।

महामंत्री श्री कमल केडिया ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

गधे की लात

मौलवी अमीमुद्दीन ने मिर्ज़ा ग़ालिब के खिलाफ़ एक पुस्तक लिखी। मगर मिर्ज़ा ने कोई जवाब नहीं दिया। किसी ने कहा, 'हज़रत! आपने उसका कुछ जवाब नहीं लिखा?' मिर्ज़ा ने जवाब दिया, 'अगर कोई गधा तुम्हें लात मारे तो क्या तुम भी उसको लात मारोगे?'

– **अयोध्याप्रसाद गोयलीय** (हँसे तो फूल झड़े)

With Best Compliments From :-

M/s ROAD CARGO MOVERS (P) LTD.

1, GIBSON LANE, 2ND FLOOR, SUIT NO :- 211
KOLKATA -700 069

Tele No. : 2210-3480, 2210-3485
Fax No. : 2231-9221
e-mail : roadcargo@vsnl.net

BRANCHES & ASSOCIATES AT

DURGAPUR, HALDIA, CHENNAI, HYDERABAD, BANGALORE, ICHAPURAM, BHIVANDI, COCHI, MUMBAI, VIJAYWADA, COIMBATORE, GAZIABAD, PONDICHERRY, VISAKHAPATNAM

प्रान्तीय समाचार

बिहार

डॉ. राममनोहर लोहिया व्याख्यानमाला

भ्रष्टाचार : स्वरूप एवं आयाम

बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति के तत्वावधान में २५ मार्च २०१२ को बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सभागार में समाजवादी नेता एवं चिंतक डा. राम मनोहर लोहिया की स्मृति में उनकी जयंती सह व्याख्यान माला का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. चिरंजीव खण्डेलवाल ने की तथा मंच का संचालन संयोजक प्रो. (डा.) श्याम सुन्दर तुलस्यान ने किया।

व्याख्यान माला का विषय था – "भ्रष्टाचार-स्वरूप आयाम एवं समाधान विशेष रूप से बिहार के संदर्भ में।"

बिहार विधान परिषद के सभापति श्री ताराकान्त झा ने अपने उद्घाटन भाषण में कहां कि भ्रष्टाचार को समाप्त किए बगैर स्वच्छ और सुन्दर समाज की परिकल्पना नहीं की जा सकती। भ्रष्टाचार को समाप्त करना जरूरी है। भ्रष्टाचार को दूर करना है तो संस्कारों को अपनाना होगा। ज्यादा पाने की इच्छा छोड़कर लोग अपना काम ईमानदारी से करें तो भ्रष्टाचार दूर हो जाएगा।

मुख्य वक्ता श्री अकु श्रीवास्तव (कार्यकारी सम्पादक, हिन्दुस्तान) ने अपने भाषण में कहा कि बदलती जीवनशैली ने लोगो की जरूरतों को अनावश्यक रूप से बढ़ा दिया है इससे भ्रष्टाचार की जड़े मजबूत होने लगी है। हम सब भ्रष्टाचार के लिए जिम्मेदार है। जरूरी है कि बच्चों को शुरू से ही ऐसे संस्कार दिए जाए कि वे समाज में फैली बुराइयों से दूर रहकर ईमानदार और जिम्मेदार नागरिक बनें।

इसी क्रम में बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति द्वारा निम्न पुरस्कारों का वितरण किया गया –

स्व. मंजु गुप्ता पुरस्कार :– श्रीमती मधु रूँगटा, मुंगेर को बाल शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए।

स्व. आनन्द बजाज पुरस्कार :– बिहार माध्यमिक परीक्षा २०११ में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र कुन्दन कुमार, सीतामढ़ी को, ३१००/- रूपये की राशि के साथ।

स्व. गायत्री देवी मोती लाल सुरेका पुरस्कार :– बिहार माध्यमिक परीक्षा २०११ में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा शालिनी यादव, खगौल, पटना को ३१००/- रूपये की राशि के साथ।

स्व. शंकर लाल वाजोरिया पुरस्कार :– बिहार माध्यमिक परीक्षा २०११ मे प्रथम श्रेणी में द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र शेखर सुमन, सुर्यगढ़ा, लखीसराय को २५००/- रूपये की राशि के साथ।

स्व. रायबहादुर वंशीधर ढ़ांढ़नियॉ पुरस्कार :– बिहार माध्यमिक परीक्षा २०११ में प्रथम श्रेणी में द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा प्रेरणा प्रिया, नालन्दा को २५००/- रूपये की राशि के साथ।

धन्यवाद ज्ञापन किया संयोजक श्री प्रह्लाद शर्मा ने।

प्रान्तीय समाचार

कानपुर शाखा

होली मिलन एवं मारवाड़ी पंचांग का विमोचन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, उत्तर प्रदेश एवं कानपुर शाखा के संयुक्त तत्वाधान में राजस्थान भवन, कराचीखाना, कानपुर में "रंगारंग होली मिलन" कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जिलाधिकारी डॉ. हरिओम तथा विशिष्ट अतिथि टेक्सटाइल वर्ल्ड समाचार पत्र के सम्पादक योगेन्द्र शर्मा एवं विधायक सलिल विश्नोई थे। प्रान्तीय अध्यक्ष श्री राजेश कसेरा एवं कानपुर शाखा के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण सिंहानिया ने अपने स्वागत भाषण में संस्था की उत्तरोत्तर प्रगति पर प्रकाश डाला और सामाजिक समरसता एवं जनहितकारी कार्यों के प्रति संस्था की प्रतिबद्धता बनाए रखने पर जोर दिया। मुख्य अतिथि डॉ. हरिओम ने संस्था के कार्यों की सराहना करते हुए नगर के अन्य सामाजिक एवं स्वयंसेवी संगठनों को इस दिशा में सार्थक प्रयास करने हेतू प्रेरित किया। विशिष्ट अतिथि श्री योगेन्द्र शर्मा ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाजचिन्तन की भावना की महती आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए संस्था के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इस अवसर पर कवि श्रवणकुमार शुक्ल, ओमनारायण शुक्ल, "हाहाकारी" उन्नाव, श्रीमती हिना आरजू तथा प्रबुद्ध तिवारी ने अपनी हास्य व्यंग्य की फुहारों से उपस्थित सदस्यों को सराबोर किया।

मारवाड़ी पंचांग पत्रिका सम्वत् २०६९ का विमोचन मुख्य अतिथि के करकमलों से कानपुर शाखा के महामंत्री अनिल परसुरामपुरिया ने करवाया। प्रदेश महामंत्री आकाश गोयनका ने संस्था की प्रगति का विवरण प्रस्तुत किया। सम्मेलन के तीन अति वरिष्ठ सहयोगियों बल्देव प्रसाद जाखोदिया, भजनलाल शर्मा तथा शिवरतन नेमानी को स्मृतिचिन्ह देकर सम्मानित किया गया। अन्त में उपस्थित सदस्यों ने एक-दूसरे के गुलाल लगाकर व गले मिलकर होली की शुभकामनायें दी। समारोह में प्रमुख रूप से पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सोम गोयनका, राघवेन्द्र गर्ग, संजय अग्रवाल, महेश शर्मा, आलोक कानोडया, सुशील तुलस्यान, विजय पाण्डे, श्रीगोपाल तुलस्यान, अरुण सिंहानिया, सुनील मुरारका उपस्थित थे।

आशीर्वाद क्या दूँ?

याद आ रही है – सुधा की शादी के पश्चात् बाहर शामियाने में परिजन पुरजन एकत्र थे। बड़े बूढ़े लोग एक-एक कर उठते और अपने भाव व्यक्त करते, वर-वधू को आशीर्वाद देकर बैठ जाते, अन्त में सेठ गोविन्ददास ने कहा, 'अब मैं बहन सुभद्रा कुमारी चौहान से कहूँगा कि वे बेटी और दामाद को आशीर्वाद दें।' वे उठीं, बोली, 'आशीर्वाद क्या है। जिस दिन सुनूँगी देश के लिए मेरी बेटी और दामाद जेल में है या उससे भी अधिक कष्ट उठा रहे हैं, चाहे कितनी भी बूढ़ी हूँगी, मेरी छाती खुशी से फूल उठेगी।'

– **डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त** (भरतीय वांङ्मय)

प्रान्तीय समाचार

छत्तीसगढ़

प्याऊ का उद्घाटन

छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा सुंदर नगर, मेन रोड पर 'अमृतधारा' के अंतर्गत शीतल जल प्याऊ का शुभारंभ किया गया। प्याऊ का शुभारंभ करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष संतोष अग्रवाल व महासचिव घनश्याम पोद्दार ने कहा कि हमारा प्रयास है कि शहर के विभिन्न जरूरतमंद क्षेत्रों में शीतल जल प्याऊ लगाया जाए।

इस अवसर पर सम्मेलन के सहसचिव सत्येन्द्र अग्रवाल, कार्यकारिणी सदस्य संतोष तिवारी, सुभाष अग्रवाल, प्रवीण अग्रवाल, विकास सिपानी, बीएल प्रजापति, राजू अग्रवाल, प्रफुल्ल अग्रवाल, सुधीर अग्रवाल व महिला विंग की अध्यक्षा श्रीमती अनिता खण्डेलवाल, श्रीमती ममता अग्रवाल, श्रीमती छाया अग्रवाल एवं गिरीराज टॉवर के सदस्य व काफी संख्या में सम्मेलन के सदस्य व पदाधिकारी उपस्थित थे।

इससे पूर्व प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा वृद्ध आश्रम कोटा, अग्रसेन चौक में प्याऊ का शुभारंभ किया गया। सम्मेलन द्वारा समय समय पर अस्पतालों में गरीब बच्चों को बेबी किट का वितरण भी किया जा रहा है।

याद किये गए कवि दम्माणी 'मस्त'

राजस्थान के सांस्कृतिक शहर बीकानेर में जन्मे और कोलकाता में कवि-गीतकार, आधुनिक हिन्दी कविता में 'चित्रक' शैली के जन्मदाता के रूप में प्रसिद्ध हुए कवि एस. नारायण दम्माणी 'मस्त' को याद किया उनके साथियों, प्रशंसकों ने। स्थानीय फ्रैण्ड्स युनियन क्लब में, माहेश्वरी पुस्तकालय व परचम के संयुक्त तत्वावधान में कवि एस. नारायण दम्माणी की स्मृति में आयोजित सभा में, क्लब के वरिष्ठ सदस्य सूरज रतन कोठारी ने उनकी एक रचना की आवृति करते हुए बताया कि वे हमेशा ही अपने फकीराना और इश्किया मस्ती में रहते थे। मोतीचन्द कासट ने क्लब के एक कोने को दर्शाते हुए कहा कि यहीं उनका प्रिय व निश्चित स्थान था। यहाँ बैठकर उन्होंने कई रचनाएँ रचीं। क्लब सदस्य चाचा राठी ने उनके साथ बिताए क्षणों को याद करते हुए कहा कि वे हमेशा कविता की रौ में ही रहते और बैठे-बैठे ही किसी भी बात पर कविता रच दिया करते थे।

कवि आलोक शर्मा ने उनका स्मरण करते हुए कहा कि उनकी रचनाएँ पैनी व धारदार होती थी। हम स्वयं कवि होते हुए भी दम्माणीजी की रचनाओं की आवृति किया करते थे। इस अवसर पर बीकानेर से भेजे गए अपने संदेश में कवि श्रीहर्ष ने एस. नारायण को अपने बड़े भाई के रूप में याद करते हुए लिखा कि वे सीधे, सरल एवं अपनी धुन में मस्त रहने वाले थे। अपनी बात वे बिना लाग-लपेट के कहते। अपने गीतों को गाते वक्त वे उसकी लय से एकाकार हो जाते। उन्होंने मुक्त छंद की गंभीर कविताएँ भी लिखी हैं। कवि नवल ने उन्हें हिन्दी का पहला 'डी-मैट' कवि बताया।

प्रधान वक्ता के रूप में पत्रकार संजय बिन्नाणी ने 'मस्त' के साथ अपनी भेंट-मुलाकातों की चर्चा करते हुए कहा कि वे अकादमिक दृष्टि से पढ़े-लिखे नहीं थे, लेकिन उनकी काव्य प्रतिभा जन्मजात थी। शास्त्रीय संगीत की उन्हें अच्छी जानकारी थी। इसी लिए गीतों और गज़लों के उनके तरन्नुम विविधता भरे होते थे। मौज में आने पर कहीं भी शुरू हो जाते। लोहिया से प्रभावित होकर, युवावस्था में वे आन्दोलनों की राह पर भी चले। रोजी-रोटी के लिए निरंतर संघर्ष करते रहे। अलग-अलग कालखण्डों में उन्होंने रचा तो बहुत, लेकिन उनके प्रकाशन की ओर सक्रिय नहीं हो पाए।

स्मृति सभा की अध्यक्षता, पुस्तकालय के अध्यक्ष दाऊलाल कोठारी ने की तथा संचालन मुकुन्द राठी ने किया।

नाटक

संस्कार

– हरिप्रसाद कानोड़िया

पर्दा उठता है

पहला दृश्य

भीतर की बैठक का दृश्य

सेठ लक्ष्मीनारायण बैठे हिसाब किताब लिख रहे हैं। अपने पुत्र के विवाह का बजट बना रहे हैं। काम हो जाने के बाद गहरी सांस लेते हैं। फिर आवाज देते हैं – अरी भागवान, सुनती हो! तुम्हारे बेटे के ब्याह का हिसाब बनाया है। जरा आ के देख लो, कुछ बोलना है तो अभी ही बोल देना, बाद में मुझे कुछ मत बोलना।

पर्दे के पीछे से आवाज आती है (सेठानी नारायणी बोलती है) – जी आती हूं। बस हाथ का काम निबटाकर आ रही हूं। चाय पिओगे तो नौकर को बोल कर बनवाऊँ।

सेठजी–आप तो मेरे मन की बात जानती ही हो, लेकिन चाय तो विवाह का हिसाब-किताब लगाने के बाद चाहिए।

सेठानी एक गिलास चाय लेकर आती है। साथ में सुहाली भी। कहती है – अधिक खाने से वजन बढ़ जायेगा।

सेठजी – आप भी तो सेहत पर काफी ध्यान देती हो। ये अपना संस्कार है। अपने सभी बच्चे स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हैं।

सेठानी–हां, स्वास्थ्य अपना प्रथम कर्तव्य है, और यही अपना सबसे बड़ा धन है। स्वस्थ रहने से तकलीफ महसूस नहीं होती है और देश-विदेश घूम सकते हैं। व्यापार बढ़ा सकते हैं। विदेशी भोजन ही रोग की जड़ है। संतुलित भोजन से आयु बढ़ती है।

सेठजी – भागवान आप तो बहुत सीख ली। पीहर में सीखी। हम तो अपनी बेटियों को भी खेल-कूद में शामिल करवायेंगे।

सेठानी (उलाहना देती है) – फिर मेरे पीहर की बात लाये, जाओ मैं बात नहीं करती।

सेठजी – अरे नहीं-नहीं, आप रुठो मत। मैं तो बस मजाक कर रहा था।

सेठानी – आगे से पीहर की बात नहीं करेंगे। मेरे मां-बाप तो आपके भी मां-बाप हो गये।

सेठजी – हां-हां आओ बैठो, आज मन में प्यार उठ रहा है।

सेठानी – बहुत हो गया, हिसाब दिखाओ। जब देखो तो प्यार की बात। अपने को सादगी से विवाह करना है। फिजूल खर्ची बिलकुल भी नहीं करनी है। संत रामसुखदासजी सादगी से रहने के लिए बोलते थे। कितने लोग तकलीफ पाते हैं। उन लोगों को तो दो समय का भोजन भी नहीं मिलता है। धन के अभाव में कितनी लड़कियों का विवाह नहीं हो रहा है।

सेठजी – आप कितनी अच्छी बात बोलती हो। बिलकुल मेरे मन की बात। गरीबी के कारण इलाज नहीं करवा पा रहे हैं लोग। बच्चे पढ़ नहीं पा रहे हैं। संत तुलसीदासजी भी कहते थे – गरीबी सबसे बड़ा कष्ट है। अपने संबंधी बनवारीलालजी कितनी तकलीफ में रहते हैं। हम मदद करना चाहते भी हैं तो वे मदद नहीं लेते हैं। कहते हैं कि मेरे पिछले कर्म का फल है।

सेठानी – बहुत बात हो गई, लाओ हिसाब दिखाओ। हम बहू को गहना अच्छा-अच्छा देंगे। उसके पिहर वालों से मैं अपने लिये कुछ नहीं लूंगी। हिसाब देखती है फिर बोलती है – ननद बाई को भी अच्छा गहना देना है। अपने सभी भाईयों के लिए सूट बनवा दो और बच्चों के लिये कपड़े सिलवा देना।

सेठजी - बहुत बढ़िया! आपका दिल बहुत बड़ा है। हमको बहू को बेटी से भी ज्यादा प्यार करना है। वह अपने मां-बाप, भाई-बहन सभी को छोड़ कर आयेगी और उसकी तो अभी खेलने कूदने की उम्र हैं। वहू के मन के हिसाब से हमें चलना है। बहू खुश रहेगी तो बेटा भी खुश रहेगा।

सेठानी – हाँ-हाँ मैं ध्यान रखूंगी। भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि मेरे को सदा सद्बुद्धि दे।

सेठजी – आप अपनी बहू को बहुत खुश रखना। बहू को दुख होगा तो बेटे को कहेगी। इससे बेटे को दुःख होगा। वह आपके बारे में सोचेगा कि मां इस तरह से करती है। ऐसी हालत काफी खराब होती है।

सेठजी – आजकल की बहू पढ़ी-लिखी होती है, तलाक की बात कहती है। यदि ऐसा होगा तो बेटे का काम में मन

नहीं लगेगा और व्यापार में नुकसान होगा। आज कल के बच्चे गलत संगत में जा रहे हैं। नाईट क्लब वगैरह जितनी भी जगह है, सब खराब ही है। यह बच्चों को बिगाड़ देती है। सरकार को तो इन सबको बंद कर देना चाहिए।

सेठानी – आप ठीक बोल रहे हैं। मेरी बात समझ में आ रही है। मैं बहुत सतर्क रहूँगी। मैंने तो सुना है कि अपने बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने तो नाईट क्लब बंद करने का आदेश दे दिया है। बहुत अच्छा काम कर रही है। राम कृष्ण, स्वामी विवेकानंद और गांधी जी भी कहते थे कि इस धरती पर नाईट क्लब गलत संगत और शराब मनुष्य को अवनति पर ले जाता है।

सेठजी (सेठानी से) – आप पड़ोसन की बात में मत पड़ जाईयेगा। संत तुलसी दास जी कह गए हैं कि यहां निम्न विचार के लोग दूसरों की खुशी से जलते हैं जिससे वे उल्टी सीधी बात कहते हैं। उनकी सलाह पर ध्यान मत देना।

सेठानी – बगल की पड़ोसन तो कह रही थी कि बहू को अपने कब्जे में रखना। नहीं तो तकलीफ होगी और वह मालकिन बन जायेगी। बेटा तो विवाह के बाद बीबी का ही हो जाता है। मैंने तो उससे कह दिया कि यह सब बात मेरे पास मत कर। मुझे भगवान पर श्रद्धा और विश्वास है। भगवान की जो इच्छा होगी वही होगा।

सेठजी – सुन बेटी की बात में नहीं आना और साफ शब्दों में कह देना – भाभी से प्यार कर। भाभी से प्यार मिले या नहीं, वह प्यार करती रहे। प्यार की अंत में जीत होती है। प्यार से पत्थर भी पिघल जाता है। बहू से भी कह देना कि ननद को भी पूरा प्यार दे। जो मांगे उसे दे देना। किसी चीज की कमी नहीं है। कह देना मेरी-तेरी करने से बाबूजी बहुत नाराज होंगे।

सेठानी – हां जी, समझा दूंगी। आप भी बेटी और बहू को समझा देना।

आपके समझाने का असर बहुत ज्यादा होगा। कुछ डर भी रहेगा। नौकर भी चुगली करने में उस्ताद होता है। सभी को समझा देना कोई चुगली नहीं करे।

सेठजी – संत तुलसी दासजी ने कहा है कि कलयुग में बेटे को सास-ससुर और साला अधिक प्यारा होगा। सास-ससुर भी मां-बाप है। साला भाई है। अपने मां-बाप की सेवा करनी है और किसी की बात में नहीं आना है। बहू से कह देना कि कोई भी तकलीफ हो तो मुझे कह दे। बहू बेटी से बढ़ कर है। पहली बहू की बात सुनना है फिर बेटा-बेटी की। माता पार्वती ने कभी अपनी मां को शिकायत नहीं की थी। शिवजी के पास जो भी था उसी में खुश थी।

सेठानी – आप ठीक कहते हो। मैं भी आजकल गीता ध्यान से पढ़ती हूँ। जैसा कर्म करेंगे वैसा फल मिलेगा। अपने को अच्छा कर्म करना है। मनुष्य जीवन अपने लोगों को कितने जन्म के बाद मिलता है। इस जन्म में ईश्वर से प्रेम और अच्छे कर्म करना है।

सेठजी – आज शाम को बहू के माता-पिता आयेंगे। हलके नाश्ते का इन्तजाम कर लेना। वे लोग भी स्वास्थ्य के प्रति बड़े जागरूक हैं।

सेठानी – जी, ठीक है।

पर्दा गिरता है

दूसरा दृश्य

शाम का समय, बैठक सादगी से सजी है।

समधी आते है।

सेठानी और सेठजी – आईये-आईये। राम-राम और राधे-राधे से स्वागत करते हैं।

समधी – गोविन्द राम जी, बालीगंज वालो पार्क विवाह के लिये कर लियो है। होटल में बहुत खर्चो लाग जावै है। आपके कहे अनुसार सादगी से विवाह करेंगे।

सेठजी – बहुत अच्छा किया अपने।

समधी – चलिए, अब विवाह का मैनू देख लेवे।

सेठजी – अपने मैनू में सभी कुछ है। इसके अलावा और २-४ आईटम रखना हो तो रख सकते है। राजस्थानी खाना, १ सब्जी, कढ़ी और बाजरा की रोटी, खिचड़ी, चाईनिज में चाउमिन, सब्जी और दो प्रकार की मिठाई। साथ में कुलफी और आईसक्रीम होगी।

समधी (गोविन्दरामजी से) – आपने तो अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के नियम के अनुसार सबकी पसंद को ध्यान में रखते हुए सभी कार्य किये हैं।

समधन (नारायणी से) – हमारी बेटी बहुत लायक है। गीता-रामायण सब पढ़ी है। इतनी उच्च शिक्षा लेने के बाद भी घर का सभी काम-काज करती है। आप लोगों की खूब सेवा करेगी। हमने तो अपनी अपनी चारों बेटियो की यही शिक्षी दी है कि सास-ससुर की सेवा माँ-बाप समझ के करना।

– पर्दा गिरता है –

राजस्थानी कहानी

सुख आपणै आस पास

– नथमल केडिया
(साहित्य महोपाध्याय)

एक कहाणी सुनारयो हूँ पर ऊँ कै पैली एक और बात याद आयी तो ल्यो पैली वा सुनल्यो - ईसाई लोगां मांय एक भोत बड़ा सन्त हुया है - उनरो नाम है - संत फ्रान्सिस। आप ओसीसी गाँव माय हा। ऊँ गाँव रै बीचो बीच एक मन्दर हो जी माय एक भोत भारी घण्टो लाग्योड़ो हो। गांव पर जद कोई बिपद आती तव वो घण्टो बजायो जातो और ऊँ की आवाज सुनकर सारा लोग भेला हो जाता। एक पुण्यो की रात नै जव चांदनी आयै सूँ धरती पर बरस री ही और ऊठैरी सुनसान सड़का पर जैया झरणो बैंवे - बैर्‌यी ही तब वे महात्मा जी देख्या - सारा लोग गैरी नींद माय गाफल सोर्‌या है वै मंदर मांय गया और जोर जोर सूं घण्टो बजावन लाग्या। गांव पर विपद् आयी है जानकर सब लोग चिन्ता में पड़कर उठै इकट्‌ठा होगा और सन्तजी से पूछने लाग्या - कै हुयो? घंटो क्यू बजा रया हो। संत जी सान्ती सूं वोल्या - ऊपर आयँ ने निहारो कैंया री मननै मोवने हाली सान्ति बरस री है। घण्टे रो निनाद आपरै कालजे माय डर और आसंकाई क्यू पैदा करै? प्रकृति जब खुला हाथा वरदान देर्‌यी है तो क्यूं नी लेवा? या भूमिका रै बाद सब असली कहानी सुनो - मिसेज रंजना लड़कियॉ री हाईस्कुल माय क्लास टीचर है – ऊँची ऊँची कक्षावां माय ही भणावे। तेज तक्रार तथा आपरौ काम मांय मुस्तेद है। ऊँ का पड़ोसी कोई बड़ी कम्पनी मांय ऊँचै पद पर है। उनारै घर माय ऐसो आराम रो सारो समान है और वो भी सारो विदेसी। गाड़ी री जगा गाड़ी और रोज ही क्लव व सैर सपाटा। पर रंजना रै कनै तो ये सब कुछ नी हाला कि धर उपयोग री सारी चीजां है। ऊं दिन मिसेज रंजना नै ये बात भोत अखररी ही – मेरे कनै ये सव चीजॉ क्यू नी म्हे कै इत्ती अभागी हूं? इन्ही तरै री मन री उहापोह माय बा स्कूल माय आयी और क्लास री लड़कियाँ नै भणानो सुरु कर दियो। सौभाग्यवश ऊ दिन उनने वेलजियम लेखक मॉरिस मेटरलिंक रौ नाटक पढ़ा णो हो ऊ माय एक छोटे बालक रो वर्णन है जिको सुख री खोज करतो सुरग पूग जाव उठै उनने अनगिनत छोटा छोटा दिव्य वालक मिले। वो लड़को उनाने पूछै – आप कुन हो? तो वे वतावे कि म्हे लोग सुख हां और रात दिन तेरे घर माँय ही रैवा। लड़को झुंझलाकर बोले – म्हारे घर माय तो सुख है ई कोनी? ऊँ की बात सुनता ही वे सारा बालक खिलखिला पड़े – लो इन भाई साव को तो इती सी खबर भी नी। फिर वे बालक उनने ऊंके घर रा सुख बताने लाग जावें - खुली ताजी हवा रो सुख, ठुठराने हाली ठण्डी रात माय सिगड़ी रे पास बैठकर आग तापने रो सुख, मखमली हरी दूव पर नँगा पाँव दौड़ लगाने रो सुख, वसंत रुत साथ गाछा पर खिलेड़ा फूल देखने रो सुख, उनकी सुगंध लेने रो सुख, टावरा पर ममता बरसाने रो सुख, माँ रो परेम पाने रो सुख। वे बालक और भी बोलने लगा - पलंग पर लेटया खिड़की सूँ आभै री निलिमा निहारने रो सुख, निलिमा रे ऊँ सागर मांय नौका री ज्यूँ तिरता चंचल बादलां नै देखने रो सुख, सॉझ नै काम सूँ घर वापस आने रो सुख, निर्दोष नन्हा बालकॉ रा गाल सहलाने रो सुख, उत्तम किताबाँ भणने रो सुख, परेम करने और परेम पाने रो सुख सचमुच सुखों का तो अन्त नही है - और इयाँरा अनगिनत सुख तेरे आसपास खड्या है। यदि म्हे उनाने गिनाने लाग जावाँ तो तूँ चकत रह जावेगा? पर तं फालतू बाताँ री चिन्तावाँ में तथा बेकार चीजो री कामना में लुभ्योड़ो उनरे पीछे भाग रयो है। ई लिये तेरी नजर ई सुखा पर पड़े ई नी। यदि इन सुखा रे मुख सूँ बोल निकलता तो तेनै कैता – म्हे लोग अठे ई हॉ एकदम तेरे कन्ने। यदि तूँ जरा सा तेरा हाथ बढ़ावै तू म्हानै छू सकैगो पल भर भी तेरी आँख्या खोलै तो म्हारो हँसतो मुण्डो देख सकेगो तेरे काना रा पर्दा थोड़ा सा भी खोलै तो म्हारी गानो सुन सकैलो तूं तेरे मन रा किवाड़ खोल तो सही म्हे तेरे जीवन माय ढुक कर आनन्द सूँ लबालब भर्‌दयाँ।

भणाता भणाता रंजना ऊँ नाटक माय एक दम लवलनि होगी ही कै एक लड़की पूछ्यो – आज आप उदास क्यू हो – मेम। ऊँ को पूछनो होयो कि वा चौंकी – अरे म्हे तो क्लास मायं लड़कयां नै पढ़ारी हूँ और तब उनने लाग्यो कि मेरी या लड़किया ही सुरग रा दिव्य बालक है, जिका ऊँ लड़के ने मिल्या। इनरो मेरे प्रति कितनो अपनोपन है तथा इनरो मुखड़ो कित्तो भोलो मासूम है - साच्याणी इनसे जियादा कीमती दुनिया में और कोई भी चीज नी हो सकें।

कविता

कविता की तलाश

– नथमल केड़िया

मैं निकला करने कविता की तलाश
सर्वप्रथम पहुँचा मोर के पास
सुनकर जिज्ञासा वह मौन रहा क्षण भर
फिर पंख फैला नाचने लगा क्वणन क्वणन।
मोरनी पास खड़ी रही थी निहार
ऑखें एकदम मोर की ऑखों में
उमड़ रहा था हृदय में प्यार
एकाएक घूमी मेरी ओर, बोली देखो भर नजर,
पंखों पर हरपल नई कविता रही है, उभर।
अरे! आकाश से उड़ेल देते हैं, बादल कविताओं की गागर
नीचे धरती बिसर जाती है तनमन, उन्हें पढ़कर
इतने में चकवा चकवी का हुआ आगमन
बोले यदि विरह - काव्य का करना चाहो दर्शन
तो किसी रात हमारे पास आने का तुम्हे आमंत्रण
उसी समय पक्षी कुरजॉ आयी वहाँ उड़कर
बोली ऑसुओं में लिपटी
उलाहनों भरी असंख्य कविताएं
लिखी हुई है मेरे पंखों पर
जिन्हे मै पहुँचाती हूँ परदेशी प्रियतमों को जीवन भर
इतने मे कही से उड़कर कोयल आ गई
बोलने के साथ सबके मन को भा गई
बोली बन्धू! कविता तो है पूरा जीवन
उसी से होता है बसंत का आगमन
देखा मैने वे सभी थे भरे पूरे मगन मन
सबने एक स्वर से मुझे बताया
तलाशने से नहीं मिलती कविता
रची भी नही जाती है कविता
उसे तो जीया जाता है
हॉ कविता को केवल जीया जाता है।

राजस्थानी कविता

भ्रष्टाचारी मुद्दो!

भ्रष्टाचारी मुद्दो! म्हानै इब कोनी भावै।
रागपच्चीसी सरकारी हळकै मैं सैगावै।।

कलमाड़ी अर बींका साथी, नोट घणां गटक्या,
पकड़ा गया तो जेळ सींखचा रै पीछै पटक्या।
खेलकूद कै आयोजन कर, नाम कमां भटक्या,
पाणीं मैं ये मिला दूध, अद्धा पउवा सटक्या।

बेइमानी की अमर बेल आंकै बुंगलै छावै।।
भ्रष्टाचारी मुद्दो म्हानै इब कोनी भावै।।

टू–जी का घोटाला अरबा-खरबां का होया,
फूटकाकड़ी छोड़, करेला कीकर क्यूं बोया।
राजा-कन्नीमोड़ी बैठ्या, सिर धुन-धुन रोया,
भष्टतंत्र की गळिया मैं इब राजतंत्र खोया।

आग! जागकर इबतो भारत माता नैं ध्यावै।।
भ्रष्टाचारी मुद्दो म्हानै इब कोनी भावै।।

प्रशासनिक अधिकारी नेता, जनसेवक इतर्या,
कई बण्या कानून, कचहरी का जज तक छितर्यां।
काली पट्टी बांधी ये तो निज-निज कै नितरां,
कूंवै भांग पड़ी है भाया, यो कइयां बिसरां।।

जन मानस को आत्म जागरण, ही शुभ दिन ल्यावै।।
भ्रष्टाचारी मुद्दो म्हानै, इब कोनी भावै।।

एक सुमंगल प्रात भवानी, देवी दरस दियो,
स्वामी प्रखर समर्पित बाबो, हिय मैं वचन लियो।
चार लक्ष चण्डी जग (यज्ञ) को मन मैं सुविचार कियो,
भ्रष्टाचार विमुक्त राष्ट्र हित, जन विश्वास जियो।

भ्रष्टाचार करां ना सहागां यही गीत गावै।।
भ्रष्टाचारी मुद्दो म्हानै इव कोनी भावै।।

– पं० रमेश मोरोलिया
श्रीविश्वनाथ धाम आश्रम, शंकराचार्य मार्ग
शिवनगर, भूपतवाला, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

पुस्तक समीक्षा

आत्म मंथन

लगभग एक दर्जन से भी ज्यादा सामाजिक एवं शैक्षनिक संस्थानों से जुड़े लक्ष्मी निवास शर्मा की पुस्तक 'आत्म मंथन' एक प्रकार से आत्मकथा का ही प्रतिरूप है जिसमें लेखक ने अपने माता पिता से लेकर निज जन्म से अब तक के कार्यकलापों का विधिवत् उल्लेख किया है। पुस्तक के आरंभ में वंशावली के द्वारा लेखक ने अपने पूरे वंश का विस्तार से वर्णन किया है। तदोपरांत पूर्वजों को श्रद्धांजलि एवं पिता के जीवन से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण प्रसंगों तथा पिता के दोस्तों व मित्रों का उल्लेख किया हैं।

पुस्तक में लेखक ने बड़े ही रोचक ढंग से जीवन के विभिन्न पहलूओं पर प्रकाश डाला है – जन्म एवं बाल्यकाल, शिक्षा, विद्यार्थी जीवन, खेलकूद एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, विवाह तथा वैवाहिक जीवन के उतार चढ़ाव व जिन्दगी के सफर में पड़ने वाले महत्वपूर्ण पड़ावों का बड़े ही सरल एवं रोचक ढंग से वर्णन किया है। लेखक ने अपनी साहित्य से लेकर ज्योतिष शास्त्र तक की यात्रा का वर्णन भी बड़े ही सरल शब्दों में किया है। परिवार के अन्य सदस्यों पर भी प्रकाश डाला गया है। अपने व्यवसायिक जीवन से लेकर अब तक की एक लंबी यात्रा का आत्म मंथन लेखक ने जिस सरलीकरण के साथ किया है, सराहनीय है। पेशे से चार्टर्ड एकाउण्टेंट लक्ष्मी निवास शर्मा की पुस्तक 'आत्ममंथन' एक संग्रहणीय पुस्तक है। जीवन मरण के बीच की यात्रा कहीं स्वर्गीय सुख प्रदान कराती है तो कहीं घोर यातना भी देती है – पुस्तक का मूल उद्देश्य यहीं है। पुस्तक में परिवार एवं पारिवारिक संस्कारों को अहमियत दी गयी है एवं रिश्तों को मधुर लिबासों में पेश किया गया है। पुस्तक – आत्म मंथन, लेखक – लक्ष्मी निवास शर्मा, पुस्तक-प्राप्ति – भारद्वाज, प्लाट नं १५/१६ पंचवटी कॉलोनी बोइन पल्ली, सिकन्द्राबाद - ५००००१, पृष्ठ – २९९ सजिन्द।

– अनंतशिव

SMS की दुनिया

Beautiful line of life :
"You haven't lived a perfect life,
unless you have given something
to someone who will never be
in a position to REPAY you."

श्मशान के बाहर लिखा था–
"मंजिल तो तेरी यही थी
बस जिंदगी गुजर गयी आते-आते
क्या मिला तुझे इस दुनिया से –
अपनों ने ही जला दिया तुझे जाते-जाते।"

"जिन्दगी बड़ी अजीब होती है
कभी हार कभी जीत होती है
जब आ जाए हँसते आँखों में आँसू
तो अहसास होता है
हर खुशी के पीछे कितनी तकलीफ होती है।"

I don't believe in
"TIT for TAT RULE"
cause i cant bite a dog who has bitten me
Dnt spoil ur level just to teach others a moral.

"क्या दुआ करु में मेरे अपनों के लिए,
बस यही दुआ है कि मेरे अपने कभी किसी
दुआ के मोहताज न हों।"

Life is like playing chess with God,
After you r every move,
He makes The Next move,
Ur moves R Called CHOICES
& His moves R called CHALLENGES.

3 GOLDEN WORDS OF VIVEKANAND–
"Who's helping U, dont Forget them."
"Who's loving U, dont Hate them"
"Who's believing U, dont Cheat them."

साथ चलने के लिए साथी चाहिए
आँसू रोकने के लिए मुस्कान चाहिए
जिंदा रहने के लिए जिंदगी चाहिए
और जिंदगी के लिए आप जैसा दोस्त चाहिए।

सम्मेलन द्वारा विवाह समारोहों में सादगी बरतने की अपील

आपके सुपुत्र/सुपुत्री के मांगलिक विवाह के अवसर पर कृपया हमारी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। कृपया वर-वधू को सुखी एवं दीर्घ वैवाहिक जीवन की हमारी शुभकामनाएं प्रेषित करने की कृपा करें।

हमारे पूर्वजों ने ९६ वर्ष पूर्व समाज के सर्वांगीण विकास एवं समाज सुधार के उद्देश्यों को लेकर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना की। सम्मेलन दहेज, दिखावा, आडम्बर, फिजूलखर्ची, पर्दा प्रथा आदि रुढ़ियों एवं सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध सचेष्ट रहा है।

वैवाहिक समारोहों में बढ़ता आडम्बर, दिखावा एवं फिजूलखर्ची, महंगे वैवाहिक निमंत्रण पत्र एवं शुभ विवाह जैसे मांगलिक अवसर पर कॉकटेल पार्टी (मद्यपान) का आयोजन आदि समाज के लिये गंभीर चिंता का विषय है। इन बढ़ती कुरीतियों पर अंकुश लगाना आवश्यक है। इतर समाज में हमारी छवि खराब हो रही है।

यह आवश्यक है कि हम इन विषयों पर गंभीर चिंतन कर इन प्रवृतियों से परहेज बरतते हुए समाज की स्वस्थ छवि प्रस्तुत करने में सहयोग प्रदान करें।

आपका सहयोग एवं समर्थन समाज सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान सिद्ध होगा।

आदर सहित –

आपका

हरि प्रसाद कानोड़िया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

जुगल किशोर सराफ
चेयरमैन
समाज सुधार समिति

संतोष सराफ
राष्ट्रीय महासचिव

आपके विचार

"समाज विकास" अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र है जो गत ६१ वर्षों से कोलकाता से प्रकाशित किया जा रहा हैं।

सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य हैं समाज सुधार, समरसता एवं राष्ट्रीय एकता। समाज के साहित्यिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विकास हेतु विभिन्न पहलुओ पर "समाज विकास" के माध्यम से चर्चा आयोजित की जाती है।

समाज सुधार एवं समरसता के अन्तर्गत देहज-दिखावा, आडम्बर, फिजूलखर्ची, विधवा विवाह, बढ़ते तलाक, टूटते परिवार, गिरते सामाजिक एवं नैतिक मूल्य, अर्न्तजातीय विवाह, वृद्धाश्रम क्यों, आदि विषयों पर विचार-विवेचना "समाज सुधार" के माध्यम से करने का प्रयास किया जाता है।

आपके विचारों को प्रकाशित कर हमें हार्दिक प्रसन्नता होगी।

– **सीताराम शर्मा**
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
एवं सम्पादक, समाज विकास

सम्मेलन के नए आजीवन सदस्यों का स्वागत

नाम : श्री कैलाश परसरामपुरिया
निवास : पी-१९४, सी आइ टी रोड
कांकुड़गाछी
कोलकाता - ७०० ०५४
मोबाईल : ०९८३०० ४१५८३

नाम : श्री गोविंद राम अग्रवाल
निवास : २२ ली रोड,
ब्लॉक - 'बी'
कोलकाता - ७०० ०२०
मोबाईल : ०९८३०० ३४१७१

नाम : श्री आनंद कुमार लड़िया
निवास : बी-१३/१५२, सोनारपुरा
वाराणसी - २२१००१ (उ० प्र०)
मोबाईल : ०९९१८ ००५२०

नाम : श्री कृष्ण कुमार अग्रवाल (शाह)
निवास : २०ए, पाइकपारा रो
कोलकाता - ७०००३७
मोबाईल : ०९८३१० १४९९८

नाम : श्री सत्यनारायण सोनी
निवास : एडी-१६०, विधान नगर,
सेक्टर - I
कोलकाता - ७०० ०६४
मोबाईल : ०९८३०९ ४२११२

नाम : श्री दिलीप कुमार गोयनका
निवास : ४२, मदन मोहन बर्मन स्ट्रीट
कोलकाता - ७०० ००७
मोबाईल : ०९८३१२ ८१५००

नाम : श्री विनोद कुमार केड़िया
निवास : एडी-३, साल्टलेक
सेक्टर - I
कोलकाता - ७०० ०६४
मोबाईल : ०९८३१० २२१११

नाम : श्री नरेश कुमार खेतान
निवास : बी-१०२, फ्रीडम फाइटर इनक्लेव
गेट नं ०३, नेबसराय, साकेत
नई दिल्ली - ११००६८
फोन : ०९९५३० ०८७२३

नाम : श्री अनिल चौधरी
निवास : श्रीराम गार्डेन
१५, बेलभेडर रोड, अलीपुर
कोलकाता - २७
मोबाईल : ९८२४१ ०२५२५

नाम : श्री ज्ञानेश चौधरी
निवास : श्रीराम गार्डेन
१५, बेलभेडर रोड, अलीपुर
कोलकाता - २७
मोबाईल : ९८३०१ ०६५४३

सम्मेलन के नए विशिष्ट सदस्यों का स्वागत

नाम : श्री आशीष बी. गुप्ता
निवास : बी-२९, मायानगरी
कुंदननगर, दपोदी, पूणे ४११०१२
महाराष्ट्र
मोबाईल : ०९३२०० ०९४६१

नाम : श्री विशाल भारद्वाज
निवास : द्वारा श्री चेतन राम शर्मा
बी-५९, शास्त्री नगर, ज्वालापुर
हरिद्वार २४९४०७ (उत्तराखंड)
मोबाईल : ०९०२७८ ३३८२१

नाम : श्री अर्पित अग्रवाल
निवास : राधा कृपा अपॉर्टमेंट,
फ्लैट ४०३,
४९/५२, जनरलगंज
कानपुर - २०८००१ (यू. पी.)

नाम : श्री पवन कुमार सिंडोलियाँ
निवास : ई/२, श्रीरामनगर,
गोल गुरुद्वारा, ज्वालापुर
हरिद्वार २४९४०७ (उत्तराखंड)
मोबाईल : ०९७६०५ ०५६५३

नाम : श्री संदीप रामअवतार अग्रवाल
निवास : विट्ठल विहार,
फ्लाट नं -२, बैरियर नं ६
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
मोबाईल : ०९८३७३ ६३६७३

नाम : श्री राकेश कुमार चोखानी
निवास : क्वार्टर-२५, टाइप-४,
सेक्टर-५ए, भेल
हरिद्वार - २४९४०३ उत्तराखंड
मोबाईल : ०९७१९४ २९९६६

नाम : श्री संतोष कुमार खेतान
निवास : खेतान हाउस
सी-९१, गंगानगरी, भेल, भाखराबाद
हरिद्वार २४९४०२ (उत्तराखण्ड)
मोबाईल : ०९३१९० ४११९४

नाम : श्री रमाकांत हरलालका
निवास : १८०१/२/३, आइवी टॉवर
संत वैली, मालाड (पूर्व)
मुंबई - ४०००३३
फोन : ०९८६७६ २५०५३

नाम : श्री श्याम सुंदर पारीक
निवास : शिव मार्बल
बूढ़ीमाता मंदिर के सामने, कनखल
हरिद्वार २४९४०४ (उत्तराखंड)
मोबाईल : ०९०४५१ १८३३७

नाम : श्री भरत कुमार राजपुरोहित
निवास : ३४बी, गणेशपुरम
सतीकुण्ड के सामने, लक्सर रोड,
कनखल, हरिद्वार-२४९४०८ (उत्तराखण्ड)
मोबाईल : ०९६३९० १८६२५

viom
NETWORKS

A Leading Telecom Infrastructure Company Globally

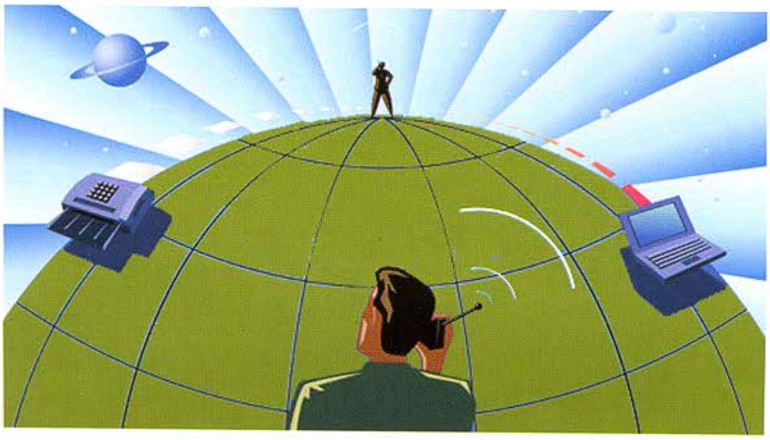

Independent entity with over 38,000 towers and over 89000 tenants

Plans to roll-out nearly 20-25,000 additional towers and take tenancy ratio to 2.5x

Strongest player in neutral host Shared In-Building Solutions (IBS)

First Indian Telecom Infrastructure Company to receive ISO 14001 & OHSAS 18001 Certification

Viom Networks Limited

Corporate Office : 14 & 15th Floor, DLF Square, Jacaranda Marg, DLF City, Phase 2, Gurgaon - 122 002. India

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 28 April, 2012
RNI Regd. No. 2868/68

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : aimf1935@gmail.com